

न्यूज़ बकेट

भारत और जापान की दोस्ती
का प्रतीक है 'ङढ़ाक कन्डेशन
सेंटर', शिवलिंग नुमा है
आकार! - 29

वर्ल्ड ट्रेस्ट चैपियनशिप के
फाइनल में भारत को मिली
हार के 5 अहम बजह! - 31

यूपी में खेला होइ?

बदलती रहीं सरकारें, नहीं बदले गाँवों के हालात!



"योगी की अक्षमता के चलते
यूपी में हर तरफ हाहाकार
मैचा हुआ है। हालत बेकाबू
हैं। गाँव को उनके भाग्य
पर छोड़ दिया गया है।"
- अखिलेश यादव

"यह रिसर्च का विषय है
कि कैसे गांव के लोगों ने
क्वारंटीन सेंटर बनाए,
किसी को भखा नहीं
रहने दिया और शहरों
तक दूध-सब्ज़ी पहुंचाते
रहे।"- नरेन्द्र मोदी

"गरीबी सिर्फ एक मानसिक
स्थिति यानी दिमागी हालत
है और इसका खाना खाने,
रुपये और भौतिक चीजों
से कोई वास्ता नहीं है।"
- राहुल गाँधी

"राजनीतिक व जातिवादी
द्वेष से ऊपर उठकर तथा
गौतम बुद्ध के जीवन
आदर्शों पर चलकर यूपी
को विकसित कर
सकते हैं।"
- मायावती

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र में
बनाये अपने सपनों का आशीर्याना,
सस्ते दामों में प्लॉट उपलब्ध!



साक्षी इंफ्रासिटी प्रा० लि० क्रय विक्रय केंद्र

सारनाथ, भुल्लनपुर, केशरीपुर, रोहनिया, रामनगर, टेंगड़ामोड़, सामनेघाट,
पठेलनगर, पहाड़िया में जमीन, मकान, प्लॉट व फॉर्महॉउटस हेतु संम्पर्क करें।

बाबा शॉपिंग काम्प्लेक्स, बीएचयू टोड, लंका, वाराणसी
ओम साईंकी कुटी, अकथा तिराहा, वाराणसी

मोबाइल नं. 7905288635, 0542-2581888

भीतर

ये अफ्सी का दरिया है और दुब के जाना है, कहां खोया है विकास, मुक्तिकल इसे पाना

बारिश ने वाराणसी का हाल खबाब कर रखा है। पहली ही बरसात में वाराणसी की कई सड़कों पर छोटी नदियों का उद्भम हो गया। पढ़े पूरी खबर, **पेज नं. 12 पर...**



भारत दुनिया में सबसे ज्यादा कोरोना टीके लगवाने वाला देश बन गया है। इस बीच, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने प्रेग्नेंट महिलाओं के टीकाकरण को लेकर गाइडलाइन जारी कर दी है। इसके तीन दिन पहले ही सरकार ने कहा था कि गर्भवती महिलाओं को कोविड-19 टीका लगाया जा सकता है। पढ़े पूरी खबर, **पेज नं. 22 पर...**

प्रेग्नेंट महिलाओं को कब लगवाना चाहिए कोरोना टीका, पढ़िए स्वास्थ्य मंत्रालय का जवाब!

सुपरहिट फिल्मों में काम करने वाले ये एकतर्सी दृष्टि चुके हैं बी ग्रेड मूवी का हिस्सा, अब लेते हैं करोड़ों में !

दृष्टि सितारा जब फिल्म जगत में कदम रखता है तो वो यही सोचता ही कि वो एक दिन बहुत बड़ा अभिनेता बनेगा। हालांकि बड़े-बड़े कलाकारों की जिंदगी में भी एक ऐसा दौर आता है पढ़े पूरी खबर, **पेज नं. 24 पर...**

संपादकीय.....	04
कवर स्टोरी.....	05-11
विचार.....	12-15
मुद्दा.....	16-20
स्वास्थ्य.....	21-22
मनोरंजन.....	23-26
साक्षात्कार.....	27-28
रिपोर्ट.....	29
खेल जगत.....	30-31
टेक ज्ञान.....	32-33
नौकरी.....	34
धार्मिक.....	35-36
राष्ट्रिय.....	37
न्यूज़ हेडलाइंस.....	38-45
टाइम-पास.....	46

न्यूज़ बकेट

www.newsbucket.in

जुलाई 2021

वर्ष 2

अंक 6

संस्थापक संरक्षक

संरक्षक : मिथिलेश पटेल

प्रधान संपादक : राजू श्रीवास्तव

वरिष्ठ पत्रकार : रमेश उपाध्याय

पत्रकार : विकास कुमार श्रीवास्तव

फोटो एडिटर : सुधीर कुमार गुप्ता

छायाकार : धीरेन्द्र प्रताप

कानूनी सलाहकार

भूपेश पाठक : अधिवक्ता

प्रधान कार्यालय (FIVE ALPHABETS)

बी - 31/19, आर बाबा शॉपिंग

काम्लेक्स लंका, वाराणसी।

E-Mail : m@fivealphabets.com

मो० : 9415147110, 8574479280, 9807505429

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मिथिलेश पटेल एवं संपादक राजू श्रीवास्तव ने गाँयल प्रिंटिंग वर्कर्स - C 25/2 राम कटोरा, चेतगंज, वाराणसी से मुद्रित कराकर बी - 31/19, आर बाबा शॉपिंग काम्लेक्स लंका, वाराणसी से प्रकाशित किया।

R.N.I.-UPHIN/2020/78911

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखक के हैं। उसमें संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त विवादों का क्षेत्र वाराणसी न्यायालय होगा।

देश भर में मोदी सरकार की नीतियों की वजह से पढ़े लिखे बेटोनगारों की जिनती हर साल बढ़ती जा रही है। कोरोना के चक्कर में लाखों छोटे व्यापार व कारखाने बंद हुए हैं और उन की जगह विशाल कारखानों ने ले ली हैं पढ़े पूरी खबर, **पेज नं. 14 पर...**



बेटोनगार युवा और मोदी सरकार!

संक्रमण से सावधान: सार्वजनिक स्थानों पर न बढ़े भीड़, गाइडलाइंस का सख्ती से हो पालन!

केंद्र ने सभी राज्यों को पत्र लिखकर कोटोना प्रोटोकाल का पालन कराने के जो निर्देश दिए, उन पर गंभीरता से ध्यान देने की सख्त ज़रूरत है, क्योंकि जैसे-जैसे लाकडाउन में ठील दी जा रही है, वैसे-वैसे सार्वजनिक स्थानों में भीड़ बढ़ती दिख रही है। चिंताजनक यह है कि यह भीड़ न तो शारीरिक दूरी के पालन के प्रति सचेत दिखती है और न ही संक्रमण से बचे रहने के अन्य उपायों को अपनाने के प्रति। यह हैरान करता है कि सार्वजनिक स्थलों में बहुत से लोग ऐसे दिखते हैं, जो मास्क भी नहीं लगाए होते। यदि लगाए भी होते हैं तो गलत तरीके से। इसमें संदेह है कि ऐसे लोग अपनी सेहत के प्रति ज़रूरी सजगता बरतते होंगे। आवश्यकता केवल यह नहीं है कि राज्य सरकारें और उनका प्रशासन लोगों को उन तौर-तरीकों को अपनाने के लिए प्रेरित करें, जो कोटोना संक्रमण से बचे रहने में सहायक हैं, बल्कि यह भी है कि ऐसे उपाय करें, जिससे लोग कोटोना प्रोटोकाल का उल्लंघन करने से दूर हों।

सार्वजनिक स्थलों पर शारीरिक दूरी का परिचय देने और सही तरह मास्क लगाने के लिए केवल टोका-टोकी ही नहीं होनी चाहिए, बल्कि ऐसी व्यवस्था भी की जानी चाहिए, जिससे किसी एक जगह ज्यादा लोग न एकत्रित होने पाएं। बतौर उदाहरण सब्जी-फल मंडियों, साप्ताहिक बाजारों और ऐसे ही अन्य भीड़ वाले स्थानों में दुकानें पास-पास नहीं लगाने देनी चाहिए। इसी तरह भीड़ वाले स्थानों में एक दीमा से अधिक लोगों को जाने से रोकने की भी कोई व्यवस्था बनानी चाहिए।

केवल सरकारी आदेश-निर्देश से लोग चेतने वाले नहीं, जो संक्रमण से बचने के लिए सावधानी का परिचय आदतन नहीं देते। सावधानी के साथ-साथ ज्यादा से ज्यादा कोटोना टेस्ट करने की भी ज़रूरत है। उचित यह होगा कि अलग-अलग स्थानों पर जाकर औचक टेस्ट किए जाएं, क्योंकि कई बार लोग तब तक स्वेच्छा से टेस्ट नहीं करते, जब तक किसी समस्या से जूझ नहीं रहे होते। यह ठीक है कि ज्यादातर राज्यों में संक्रमण के मामले घट रहे हैं, लेकिन इसके आधार पर इस नतीजे पर नहीं पहुंचा जा सकता कि महामारी से मुक्ति मिलने जा रही है। अभी इसके आसार नहीं हैं। आसार तो इसके हैं कि सिंतंबर-अक्टूबर में संक्रमण की तीसरी लहर आ सकती है। हालांकि सभी राज्य सरकारें तीसरी लहर से निपटने की तैयारी कर रही हैं, लेकिन यह तैयारी सचमुच होनी चाहिए। बेहतर होगा कि इसकी परख लगातार की जाती रहे कि तीसरी लहर का मुकाबला करने के लिए पर्याप्त प्रबंध किए जा रहे हैं या नहीं? इसके साथ ही ठीकाकरण अभियान में सचमुच तेजी भी लाई जानी चाहिए।



-राजू श्रीवास्तव

उत्तर प्रदेश के राजनीतिक धुरंधरों में कौन है खिलाड़ी नंबर 1?

उत्तर प्रदेश को भारत के सबसे बड़े राजनीतिक विरासत का केंद्र कहा जाता है। दिल्ली का रास्ता लखनऊ से होकर जाता है। इस बात में इतना दम है कि अगर आप बनारस के किसी चौक चौराहे पर बैठ जाएं तो हर दूसरा आदमी आपको राजनीति के नफा नुकसान की जानकारी बिना किसी कागजी घोड़े के सिर्फ एक पान गुलगुला कर या चाय की चुस्की लेकर दे सकता है। कमोबेश यही हाल यूपी बिहार व अन्य हिंदी भाषी राज्यों की है। लेकिन इन सबके बावजूद यही राज्य हैं जो सबसे ज्यादा पिछड़े हुए हैं। बहरहाल, उत्तर प्रदेश कई मायनों में इन राज्यों से खास रहा है। जब भी यूपी की विकास के बारे में सटीकता से अनुमान लगाने या इसकी समीक्षा करने की बात होती है तो हर बार केवल इसके सबसे अधिक (लगभग 24 करोड़) जनसंख्या होने के बोझ से इसे नकार दिया जाता है। या इस पर पर्दांडालने की कोशिश की जाती है।

पिछले चार-पाँच सालों में उत्तर प्रदेश में राजनीतिक व सामाजिक मोर्चे पर काफी बदलाव देखने

को मिलें। जब साल 2017 में भाजपा सरकार बनी, लोगों में अपार उत्साह व भरोसा था, सरकार के प्रति लोगों का लगाव था। उन्हें लगता था कि राज्य में भाजपा ने जो सपने दिखाएं हैं वो जरूर पूछा करेगी। लोगों की उम्मीदें बढ़ी, कल्पनाएं आसमान की तरफ जाने लगी, तब सरकारी अमलों में एक तरह की हताशा, निराशा और अविश्वास की झलक जैसे परदे में छेद की तरह दिखाई देने लगी। भाजपा विकास के मुद्दे से भटक कर हिंदू-मुसलमान, भारत-पाकिस्तान, देशद्रोही, टुकड़े-टुकड़े गैंग, अब्बन-नक्साल इत्यादि मुद्दों में मथगूल हो गई। अब सरकार के चार साल निकल चूके हैं। हर कोई नफा-नुकसान की समीक्षा कर रहा है। योगी के परीक्षा की घड़ी नजदीक आ रही है, ऐसे में लखनऊ से लेकर दिल्ली की सियासी गलियारे के हवा में थोड़ी बेलखी नजर आ रही है।

जातिगत समीकरण-

उत्तर प्रदेश की राजनीति में जातियों का बड़ा महत्व है, यह चाहे केवल बोट के लिए हो या सामाजिक परिवर्तन के लिए। यहां अंगड़ी-

पिछड़ी, अति पिछड़े वर्ग हमेशा चुनाव में याद किए जाते हैं और इन सबके अपने अलग-अलग राजनीतिक रसूख हैं। सभी जातियों के अगुआ नेता भी हैं जो इनके उद्धार का बीड़ा अपने कंधों पर लेकर चल रहे हैं। उदाहरण के तौर पर अगर दलितों के नेतृत्व की बात हो तो बसपा सुप्रीमो मायावती को लगता है दलित बोट बैंक पर उनका एकाधिकार है। ठीक उसी तरह समाजवादी पार्टी के नेताओं को लगता है कि पिछड़ों में खासतौर पर यादवों का बोट बैंक उनके झोली में हमेशा गिरता रहेगा चाहे परिस्थिति कैसी भी रहे। कमोबेश यही हाल अब सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी की है जो राजभर बोट बैंक को सवारने-सजाने में लगे हैं। पूर्वचिल में राजभरों का एक बड़ा तबका ओमप्रकाश राजभर को अपना नेता भी मानने लगा है। अब बात कुर्मियों(पटेलों) की करें तो इसके भी नेता मैदान में ताल ठोक रहे हैं। अपना दल को लगता है कि कुर्मी उन्हें छोड़कर कहीं नहीं जा सकता जबकि हकीकित में अपना दल ही अपनों को छोड़ चुका है। डॉ. सोनेलाल पटेल की खड़ी इमारत (पार्टी) दो फाइ हो चुकी है।





एक तरफ बेटी अनुप्रिया पठेल हैं तो वहीं दूसरी ओर माँ कृष्णा पठेल। बेटी भाजपा के साथ सत्ता का स्वाद भी चख चुकी हैं जबकि माँ की गोद सत्ता से सुनी पड़ी है। कांग्रेस इसमें जैसे विलुप्तप्राय जीव की तरह आखिरी साँस गिन रही है। मुस्लिम, सर्वण, दलितों का भयोसा कांग्रेस अब खो चुकी है। जबकी बनारस में कांग्रेस के बड़े बड़े दिग्गज नेता हैं जो अपना प्रभाव खोते जा रहे हैं। वहीं भाजपा हिंदुत्व के नाम पर सर्वणों और दलितों के विकास के एजेंडे को आगे रखकर पिछड़ें एवं दलितों के बोट बैंक अपने पाले में करने में सफल हुई हैं।

ग्राम प्रधानोंकी भूमिका-

उत्तर प्रदेश में किसी भी पार्टी की सरकार बनाने की सबसे पहली शर्त यह है कि उन्हें छोटे सरकार यानी ग्राम प्रधान के पास जाना होगा क्योंकि गांव का मुखिया ही वो शक्तियां हैं जो गांव में बोट को प्रभावित कर सकता है। प्रधानों के अपने कटूर समर्थक एवं जमीनी कार्यकर्ता होते हैं जो बूथ मैनेजर्मेंट की जिम्मेदारी बखूबी निभाते हैं। लिहाजा जिस भी पार्टी के पास जितनी ग्राम पंचायतों के मुखिया होंगे उनके बाजी मारने की गुंजाइश भी उतनी ही ज्यादा होगी।

गांव के लोग सरकारी योजना मसलन वृद्धा पेंथन, विधवा पेंथन, नाली, खड़ना तथा बुनियादी सुविधाओं के लिये ग्राम प्रधान की ओर ही ताकते हैं। इन कामों से ग्रामीण मतदाता खासे प्रभावित भी होते हैं। यही कारण है कि बनारस में 80 फीसदी पंचायत सीट पर नये चेहरे को जनता ने मौका दिया है। विधानसभा चुनाव में इन प्रधानों का अहम योगदान है। इससे इनकार नहीं किया जा सकता और यही कारण है कि त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में राजनीतिक दलों ने अपने-अपने समर्थित उम्मीदवारों की सूची सार्वजनिक की तथा उनके जीतने का जश्न भी मनाया। मुकाबला समाजवादी बनाम भाजपा होने की वजह से बाकी पार्टियों का प्रदर्शन खराब रहा किन्तु निर्दलीयों ने जबरदस्त जीत हासिल की। बाद में इन्हें भी किसी न किसी पार्टी में जाना ही पड़ा। निर्दलीय प्रत्याशियों ने इतना प्रभावित किया कि भाजपा ने जिला पंचायत अध्यक्ष के लिये एक निर्दलीय उम्मीदवार पूनम मौर्यिको मैदान में खड़ा कर दिया।

पंचायत चुनाव के नतीजों से भाजपा कहीं ना कहीं मुश्किल में है। पार्टी के भीतर ही कार्यकर्ताओं ने योगी आदित्यनाथ को

कटघरे में खड़ा करना थुळ कर दिया। अब देखना दिलचस्प होगा कि विधानसभा चुनाव में ग्राम पंचायत के मुखिया यानी प्रधान जी किस पार्टी के लिए क्या कारनामा करके दिखाते हैं?

विकास की जमीनी हकीकत-

विधानसभा चुनाव नजदीक आते ही जमीनी विकास की

पड़ताल थुळ हो जाती है। गांव में घूमने के बाद आप यह आसानी से कह सकते हैं कि बदलाव के लिए लंबे वक्त का इंतजार करना होगा। पिछले पांच-छह दशकों में जिस तरह की हवा बनाई गई कि विकास हो रहा है, टेलिविजन चैनलों एवं अखबारों में ज्यादा चमकीला विज्ञापन दिखाई दिया। दरअसल उस विज्ञापन के नाम पर लोगों के भीतर एक उत्साह पैदा किया गया कि आपके आसपास प्रदेश भर में कुछ तो हो रहा है। किन्तु जमीनी हकीकत में अगर हम शिवपुर विधानसभा के गांवों का हाल देखें तो यह स्पष्ट होता है कि नारे जमीन पर उतर नहीं सकते हैं। रिंग गोड से सटे गांव अभी भी पक्की सड़कों, पक्के नाले व पीने के साफ पानी के लिए तरस रहे हैं। कुछ ही दूरी पर उन्हीं किसानों की जमीन पर बनी सड़क देख कर आप लहालोट हो उठेंगे। गांव में लोग बुनियादी सुविधाओं जैसे आवास, शौचालय तथा खाना पकाने के लिए गैस सिलेंडर जैसी बहुचर्चित योजनाओं की बाट जोह रहे हैं। पिछले विधानसभा चुनाव में वादे बहुत हुए हैं लेकिन काम के नाम पर ठन ठन गोपाला। योहनिया विधानसभा के गांवों का हाल भी कुछ इसी तरह का है।

ग्रामीण शहरी राय थुमारी में अंतर-

एक तरफ ग्रामीण अंचलों में मूलभूत सुविधाओं की दरकार है तो वहीं शहरी क्षेत्र आज अपने ही बुने विकास के जाल में फंसा चुका है। ताजा हालात की बात करें तो पूरा शहर हल्की सी बारिश में हुबूर-चुभूर करने लगता है। पानी घुटने छूने को बेताब हो जाती है। शहर के मानिंद तैरने लगते हैं, गाड़ियां डुबकी मारने लगती हैं। पूरा शहर जैसे लहरों में तैरती हुई नौका बन जाती है। वहीं गांव की समस्या इससे थोड़ी अलग है। कायदे से तो यहां इस तरह के जलभराव की समस्या होनी ही नहीं चाहिए लेकिन अब गांव में भी कमोबिश यहीं हाल हो रहा है वहां न तो सड़कें हैं ना पीने का साफ पानी लेकिन बारिश का पानी जो तालाबों में जाकर सिंचाई व जल स्रोत का मुख्य भंडार होते थे उनका खात्मा कर दिया गया। अब

टोककर रखना पड़ता है, शाम होने का इंतजार करती महिलाएं गंभीर रोगों की शिकार बन रही हैं। अभी भी घट-घट शौचालय का सपना अधूरा दिखता है। इलाज के लिए कोई व्यवस्था नहीं है, या तो कई किलोमीटर दूर जाकर शहर में सरकारी अस्पताल में धक्के खायें या फिर प्राइवेट अस्पताल में मोटी रकम अदा करें।

स्थानीय नेताओं/विधायकों का व्यवहार-

उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में स्थानीय नेता पार्टी के पक्ष मजबूती से रखने, माहौल बनाने, एवं बड़े नेताओं के समर्थन के लिये भीड़ जुटाने में कारगर सावित होते हैं। इन्हीं के दम पर पार्टियां चुनाव जीतने व सरकार बनाने का दंभ भरती हैं।

बनारस की बात करें तो प्रधानमंत्री का

लेकिन इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि बीजेपी पूर्वांचल में अपना गढ़ बना चुकी है, खासतौर पर बनारस जिले में। तब भाजपा समर्थित सुभासपा के एक विधायक के बिना भी, अब भी 7 विधायक भाजपा के खाते में हैं। बात चाहे शिवपुर विधानसभा की हो अथवा रोहनिया विधानसभा की, विधायकों के दर्शन यदाकदा ही होते हैं। पर क्या मजाल की माननीय सङ्क पर उत्तरकर जनता का हाल पुछ लें। रोहनिया के गजाधरपुर गांव के लोगों ने कहा की विधायक सुरेन्द्र नारायण दिंह को अब धूल से एलजी होती है। इसलिए चार पहिया गाड़ी का शीशा चढ़ाए रहते हैं। कभी हाल-चाल लेने तक नहीं आये। वहीं विधायक निवास के बगल वाले गांव भदरर में भाजपा कार्यकर्ताओं ने बताया कि यह माननीय केवल 2-4 लोगों के विधायक हैं।



गांव के गांव जलभराव के संकट का सामना कर रहे हैं। वहीं दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी खुले में शौच के लिए लोगों को जाना पड़ रहा है। वाराणसी के शिवपुर विधानसभा में हालात ज्यादा खराब हैं। यह कड़वा सच है आज इतनी जागरूकता के बावजूद महिलाओं को दिन में शौच को

संसदीय क्षेत्र होने के बावजूद यहां आठों विधानसभा में अलग-अलग जातियों ने अपने-अपने समाज के लिए नेता तय कर लिया है। अब देखना यह दिलचस्प होगा कि इन नेताओं में यह कुछत है कि वो इन समीकरणों को साधते हुए इन्हें लखनऊ की सियासत में शिफ्ट करा पाते हैं या नहीं।

किसी की नहीं सुनते। कमोबिश यहीं हाल शिवपुर में कैबिनेट मंत्री का तमगा लिये अनिल राजभर का है। कुछ चिन्हित व खास आदमी के घर प्रकट होकर धन्य कर देते हैं। बाकी जनता उनके दर्शन को व्याकुल है। चुनाव में ऐसे ही नेता भाजपा को पलीता लगा सकते हैं।

मोदी और योगी की जोड़ी-

उत्तर प्रदेश के 2017 विधानसभा चुनाव में जब प्रधानमंत्री ने चुनावी टैली में विकास के एजेंडे को धरातल पर उतारने का सपना दिखाया तो हर कोई लहा-लोट हो गया। लोगों को लगने लगा कि अगर केंद्र और राज्य में एक ही पार्टी की सरकार होगी और अगर वह नरेंद्र मोदी का पसंदीदा नेता होगा तो प्रदेश में विकास की बयार बहु उठेगी। हुआ भी ऐसा ही, नरेंद्र मोदी ने अपने मनपसंद नेता योगी आदित्यनाथ को बैक डोर से यानी पिछले दरवाजे से मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठा दिया लेकिन अभी तक राज्य सरकार को चार साल बीत चुके हैं अगर उनके कार्यों की समीक्षा की जाए तो सब कुछ ठीक नहीं कहा जा सकता। हर किसी की अलग-अलग राय हो सकती है। हर 5 में से 3 व्यक्ति योगी आदित्यनाथ के कामों से नाखुश नजर आता है। हर दूसरा व्यक्ति मुख्यमंत्री के चेहरे में बदलाव चाहता है। इसका तात्पर्य यह कहते हैं कि इससे नरेंद्र मोदी के लोकप्रियता में कमी आई है या उन्हें लोग नापसंद करते हैं अगर आप यह अनुमान लगा रहे हैं तो आप सही नहीं हो सकते। जनता में अभी भी नरेंद्र मोदी का जादू बरकरार है और अभी 7 साल के बावजूद नरेंद्र मोदी

के सामने कोई अन्य विकल्प के तौर पर लोगों को दिखाई नहीं दे रहा है, उन्हें लगता है कि मोदी मजबूत और टिकाऊ नेता हैं। वहीं दूसरी ओर योगी आदित्यनाथ से लोग हताश, निराश और नाराज दिख रहे हैं। भाजपा के कार्यकर्ता अब खुलकर कैमरे पर बोलने लगे हैं। उन्हें

लगता है कि योगीराज में अधिकारी न तो स्थानीय जनप्रतिनिधियों को तवज्ज्ञ देते हैं और ना ही पुलिस उन्हें भाव देती है क्योंकि अब आदेश सीधे लखनऊ से आ रहे हैं। इस लिहाज से क्षेत्रिय नेताओं की दाल नहीं गल पा रही है।

टोजगार बनाम राष्ट्रवाद-

जब से नरेंद्र मोदी की सरकार बनी, लगभग उसी वक्त से राष्ट्रवाद सरकारी एजेंडा हो गया। सरकार के हर कामों में राष्ट्रवाद उभर कर सामने आने लगा। कुछ कमी रह जाती है तो उसे विज्ञापन के जरिये पुरा करने का फरमान जारी हो जाता है। कमोबेश यही हाल 2017 के यूपी चुनाव में हुआ, अब जब भी चुनाव होता है राष्ट्रवाद एक अलग मुद्दा रहता है। लेकिन चूंकि अब भाजपा का केंद्र व राज्य में दोनों जगह सरकार होने के बाद देश की एक बड़ी संख्या जिन्हें आप युवा के नाम से जानते हैं, अब सरकारों के लिए सिरदर्द बनते जा रहे हैं। डिग्री लेने के बाद अब उन्हें टोजगार नसीब नहीं हो रहा, राष्ट्रवाद की लगातार खुटक देने के बावजूद बेटोजगारी के आलम ने अपनी बढ़त बना ली है। युवाओं को लगता है कि सरकारें उन्हें नजरअंदाज कर रही हैं। युवाओं का गुप्त्या प्रधानमंत्री को अपने जन्मदिन 17

सितंबर के दिन झोलना पड़ा। जब मोदी अपना जन्मदिन मना रहे थे तो ठीक उसी वक्त बेटोजगारी दिवस मना कर लोगों ने द्विटर पर ऐलान कर दिया कि अब इस मुद्दे को छिपाया नहीं जा सकता। बाद में योगी आदित्यनाथ के जन्मदिन 5 जून को भी बेटोजगारी दिवस के रूप में मनाया गया। युवाओं ने खुद ही द्विटर पर ट्रेंड कर यह साबित करने की कोशिश की कि उनके बोट लेने के बाद उन्हें अकेला छोड़ दिया जाया है। सरकार सकते हैं, आनन-फानन में टोजगार के मसले पर कुछ ठोस कदम उठाने का दबाव भी है लेकिन चुनावी साल है युवाओं की झोली में जो आ जाए वही बहुत है। चाहे शिक्षक भर्ती हो, सिपाही भर्ती हो, स्वास्थ्य विभाग में नियुक्ति का मामला हो या केंद्र सरकार के टेलरे में लाखों युवाओं के सपने टोज सुबह नींद खुलने के साथ टूट रहे हैं। उम्र बीती जा रही है और परेशानियों का एक लंबा फेहरिस्त जुड़ता जा रहा है। किसी भी नेता के लिए युवाओं के सामने राष्ट्रवाद का राग अलापना महंगा पड़ सकता है। हर कोई अब इस बात को समझ रहा है और अब तो गलियों-चौराहों पर लोग बात भी करने लगे हैं।



महामारी में महंगी हुई सरकार-

कोरोना वायरस की दूसरी लहर ने देश के नागरिकों और सरकार को हिला कर रख दिया। सबसे बड़ी मुसीबत बनकर आई दूसरी लहर ने भारत के लचर स्वास्थ्य व्यवस्था की कमर तोड़ कर रख दी। अर्थव्यवस्था चरमरा गई। देश के नागरिक बेमौत मरने लगे। सड़कों पर, घाटों पर, अस्पतालों में, हर जगह लाएं दिखाई देने लगी। हालात ऐसे हो गए कि गंगा में शव उतारने लगे। कफन ओढ़ कर रेत में दबी

पकड़ कर बैठी हैं, कोई उपाय सूझा नहीं रहा। तभी तो तालाबंदी के भीषण दौर में भी शराब की दुकानें खोलनी पड़ी क्योंकि सरकार की आमदनी का सबसे ज्यादा पैसा इसी आबकारी विभाग से आता है।

इसके बाद सरकार ने पेट्रोल टंकी पर डेरा डाल दिया और लगे हाथ नागरिकों के जेब कतरने का महाअभियान थूँथ हुआ। पहली बार डीजल व पेट्रोल जे साथ में शतक मार दिया और गैस जे लगातार नौ शतक मारा।

वोट सद्दे में दे सके।

यूपी में मुख्यमंत्री का चेहरा-

उत्तर प्रदेश में सिर्फ मुख्यमंत्री ही नहीं बल्कि प्रधानमंत्री की भी भारी डिमांड होती है। यही कारण है कि प्रधानमंत्री नेटेंट्रो मोटी को संसद जाने के लिए उत्तर प्रदेश आना पड़ा, खास तौर पर इस मामले में पूर्वचिल बेहद महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है और उसमें भी बनारस राजनीतिक अखाड़े का एक केंद्र बिंदु बनकर उभरता है। इसीलिए गुजरात के



लाएं बाहर आकर हकीकित बयां करने लगी। सरकारी बदइंतजामी ने कितने ही लोगों का नरसंहार किया। अब सरकार के पास इन सभी को सुरक्षित करने, स्वास्थ्य सहायता देने का दबाव भी है, लेकिन खजाना खाली होने के चलते सरकारें माथा

सरकारों का तेल पीछे कहां रहने वाला था उसमें भी तगड़ा छौका लगा। अब तक नाबाद पारियों के साथ यह सब मैदान-ए-जंग में ताल ठोक के लगे हुए हैं। चुनावी साल है लेकिन सरकार महंगाई को कम करने के जुगत में लगी हुई है ताकि जनता

वडोदरा से चुनाव लड़ने के साथ-साथ नरेंद्र मोदी ने बनारस से भी चुनाव लड़ा, दोनों जगह जीतने के बावजूद उन्होंने अपने संसदीय क्षेत्र के रूप में बनारस को चुना।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ महीने में दो बार बनारस का दौरा कर ही ले रहे हैं, लगातार बनारस आने का सिलसिला मंत्रियों, विधायकों, आला-अफसरों का लगा रहता है क्योंकि बनारस को प्रधानमंत्री के संसदीय क्षेत्र के रूप में विश्व पटल पर परिचित करा दिया गया है। इस लिहाज से यहां कुछ ऐसे काम कराए जा रहे हैं जिन्हें दिखाकर प्रधानमंत्री के लोकप्रियता में चार चांद लगाया जाए। कुछ काम हुए भी हैं जैसे आप बनारस में जापान के सहयोग से 182 करोड़ की लागत से बना उद्घाक्ष कन्वेंशन सेंटर गिनाने वाले काम

नरेंद्र मोदी को चुनने का नहीं है बल्कि योगी आदित्यनाथ के कार्यों को देख कर उनपर मुहर लगाने या साफ तौर पर इनकार करने का है। सामने अखिलेश यादव समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री भी हैं, उनके कामकाज की भी योगी आदित्यनाथ के कामों से तुलना की जा रही है। इस मामले में योगी आदित्यनाथ कुछ मुश्किल में ज़हर पढ़ते दिखाई दे रहे हैं। क्योंकि अपने पार्टी के भीतर भी लोगों को साधने व उन्हें मनाने की ज़रूरत है। जनता अब जातिगत राजनीति में बंट चुकी है। गांव-गिरोह में बातें थुक हो गई हैं, लोगों को

एकजुटता का संदेश दिया कि सब कुछ ठीक है मगर चेहरे के नाम पर असमंजस अभी भी बरकरार है। वहीं दूसरी ओर बहुजन समाज पार्टी यानी मायावती को लेकर जनता में ज्यादा चर्चा नहीं है, लोगों को नहीं लगता कि अब मायावती अपने अकेले दम पर मुख्यमंत्री बन पाएंगी। मायावती का भाजपा की तरफ उझान दलितों को निराश कर रहा है। इसका फायदा समाजवादी पार्टी, पिछड़ों व राजभरों की राजनीति करने वाली सुहेलदेव समाज पार्टी के ओमप्रकाश राजभर को मिल सकता है। आधिकारिक तौर पर अभी यूपी चुनाव के बिगुल बजने में



की सूची में है। गोदौलिया चौराहे पर मल्टी लेवल वाहन पार्किंग, श्री काशी विश्वनाथ कॉरिडोर और एयरपोर्ट से शहर की ओर आने के लिए टिंग रोड व बेहतरीन हाईवे डिव्यादि। यह कुछ ऐसे काम हैं जिन्हें गिनाया जा सकता है। घाटों की साफ-सफाई पर्यटन के लिहाज से बेहृद महत्वपूर्ण काम है जो पिछले 7 सालों में हुआ, और इसे इनकार नहीं किया जा सकता। लेकिन जनता केंद्र व राज्य सरकारों के कामों को बेहतर तरीके से समझ पारही हैं। उन्हें पता है कि यह चुनाव

लगता है कि अखिलेश यादव को एक बार फिर से मौका देना चाहिए क्योंकि योगी आदित्यनाथ ने रोजगार और बाकी अन्य सामाजिक सुधारों में बेहतर काम नहीं किया है। यहीं कारण था कि भाजपा ने इस थुकाती मोड को भापते हुए योगी आदित्यनाथ को मुख्यमंत्री का चेहरा बनाने या न बनाने को लेकर मंथन थुक कर दिया है। केशव प्रसाद मौर्य के घर जुटे उपमुख्यमंत्री दिनेश शर्मा, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व भाजपा पदाधिकारियों ने

कुछ वक्त ज़हर है मगर तैयारियाँ तेज हो गई हैं। राजनीतिक दल दांव-पेंच लगा रहे हैं। बड़े-बड़े दिग्गजों की साथ दांव पर है। वक्त ऐसा है कि सब जनता के दरबार में हाजिरी लगाने को कतार बढ़ है। अब जनता के हाथ में है कि अपने भाग्य की चाही किसके हाथ सौपते हैं। देखना दिलचस्प होगा कि उत्तर प्रदेश की राजनीति में किसके सिर ताज सजने वाली है और कौन बनेगा यूपी की राजनीति का खिलाड़ी नंबर 1।

वाराणसी में कब सुधरेगी गांवों की स्थिति?



बाबा काशी विश्वनाथ की नगरी काशी दुनिया से न्यारी है। देश को प्रधानमंत्री चुनकर देने वाला यह क्षेत्र आज दुनियाभर में काफी मथाहूर हो गया है। वाराणसी देश की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में जानी जाती है, मगर आज इसकी लोकप्रियता पीएम के संसदीय क्षेत्र होने के नाते से काफी बढ़ गयी है और हो भी क्यों न? देश को लगातार 2 बार प्रधानमंत्री देने वाला यह क्षेत्र अपने आप में काफी महत्व रखता है। भगवान शिव की नगरी काशी से नरेंद्र दामोदर दास मोदी ने अपने प्रधानमंत्री के कार्यकाल की थुड़आत की और आज भी वो प्रधानमंत्री के पद पर बने हुए है। खुद को मां गंगा का पुत्र बताकर उन्होंने वाराणसी जैसी महत्वपूर्ण सीट से चुनावी बिगुल पूँका और दुनियाभर में भारत को लोकप्रियता दिलाई। आज दुनियाभर के सभी देश भारत का नाम बड़ी आदर और सम्मान से साथ लेते हैं। दुर्घटना देशों को सामने से ललकारने वाले भारत की एक अलग ही पहचान उभरकर सामने आयी है।

भारत देश को भले ही 15 अगस्त 1947 में अंग्रेजी हुकूमत से आजादी मिली हो, लोग आज भी स्वतंत्रता दिवस में टिंटंगे के सामने बड़े गर्व से 'भारत माता' की जय के नारे लगाते हैं, मगर गांवों की स्थिति आजादी के बाद भी वैसी की वैसी ही बनी हुयी है। लोगों के पास आज भी सार छुपाने के लिए छत नहीं

है। रोजगार के आभाव में आज भी गांवों में रहने वाले लोग इधर उधर भटक रहे हैं। आपको बता दें कि जब न्यूज बकेट की टीम ने गांवों में जाकर जनमीनी हकीकत तलाशने की कोशिश की तो पता चला कि शायद उन्हें अभी आजादी

का अहसास नहीं हुआ है। बाइंध में टपकती छतों से बदहाल ग्रामीण बैठकर रात गुजारने को मजबूर है। बदहाली की मार झेल रहे ग्रामीण आज भी मूलभूत सुविधाओं के अभाव में जीवन यापन करने को मजबूर हैं।

सड़क और सीवर के साथ स्वास्थ्य सेवाओं से महसूल हैं गांव-

दुनियाभर में अपना लोहा मनवाने वाले भारत की सच्ची तस्वीर चकाचौंद से कहीं अलग दिखाई देती है। कहते हैं कि भारत का दिल गांवों में ही बसता है। मगर असलियत में गांवों की स्थिति अत्यंत ही दयनीय और दुखद है। जब न्यूज बकेट की टीम ने गांवों में जाकर लोगों से उनका हालचाल जाना तो चौंकाने वाली तस्वीर सामने आयी। आपको बता दें कि आज भी गांवों में चलने के लिए सड़कों की कमी है। कुछ गांव तो ऐसे भी मिलें जहां आज भी लोग घर के काम में इस्तेमाल होने वाले पानी को इस्तेमाल के बाद छोटे-छोटे बर्तनों में उठाकर बाहर फेंका करते हैं।

बदलती सरकारों के बाद भी नहीं बदली गांवों की स्थिति-

गांवों में बसने वालों की पीड़ा भारत की अलग ही तस्वीर बयां करती है। आज भी लोग विकास कार्यों का सिर्फ नाम ही जानते हैं क्योंकि उन्होंने कभी अपने गांवों

में विकास के दैर्घ्य नहीं किये। हालांकि स्थिति अब पहले से काफी बदल गयी है। कई गांवों में काफी काम भी हुआ है, लोगों तक सुविधाएं भी पहुंच रही है मगर अभी भी बहुत से ऐसे गांव हैं जिन्हें विकास का सही मतलब ही नहीं पता है। विकास के मुद्दे पर देश का नेतृत्व करने वाली सरकारों ने गांवों के साथ सिर्फ छल करने के अलावा कुछ भी नहीं किया है।

जनप्रतिनिधियोंने की अनदेखी-

ग्रामीण क्षेत्रों से जब आप गुजरेंगे तो विकास के सारे दावों की पोल खुलने लगेंगी। ग्रामीणों के अनुसार उनकी सुध लेने वाला अब कोई नहीं रहा। यही कारण है कि देश में कोई भी सरकार स्थायी नेतृत्व करने में असक्षम नजर आती है। नई सरकार से नई उम्मीदें लेकर लोग चुनाव में अपना महत्वपूर्ण मत देते हैं मगर उनके हाथ लगता है तो सिर्फ धोखा। दरअसल सभी सरकारों में गांवों को लेकर बड़े-बड़े वादें किये जाते हैं, सरकार की ओर से गांवों के विकास के लिए तमाम योजनाएं भी पास की जाती है मगर उसको अमल में लाने की जिम्मेदारी जिन जनप्रतिनिधियों के कंधों पर होती है वो पूरी तरह से विफल नजर आते हैं। चुनाव में जिन विधायकों के पीछे भागते हुए ग्रामीण उन्हें जीत दिलाने की पूरी ताकत डांक देते हैं, वहीं नेता चुनाव जीतने के बाद ऐसे गायब हो जाते हैं जैसे गधे के सर से सीधा हकीकत यही है कि यदि एक सफल जनप्रतिनिधि सभी दुनियादारी को छोड़ सिर्फ अपने क्षेत्र की जनता का ध्यान रखे तो भारत की जनता हमेशा उन्हें अपने सिर माथे पर बैठाने को तैयार रही है। शायद ये उन ग्रामीणवासियों का दुभाग्य ही है कि आज भी टेक्नोलॉजी में दुनिया से कदम-कदम मिलाकर चलने वाला हमारा भारत देश, गांवों की मूलभूत सुविधाएं नहीं देपारहा है।

ये अस्सी का दरिया है और डूब के जाना है, कहां खोया है विकास, मुश्किल इसे पाना है!

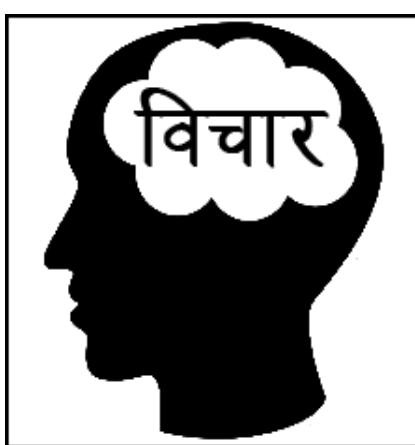


आकाश कुमार

बारिश ने वाराणसी का हाल खटाब कर रखा है। पहली ही बरसात में वाराणसी की कई सड़कों पर छोटी नदियों का उद्भव हो गया। जल निकासी की समस्या से त्रस्त वाराणसी के लोग सड़कों पर पानी में छबाक-छबाक करते चलने को मजबूर हो गए हैं। बीते माह से ही थहर में ठीक ठाक वर्षा थुरू हो चुकी है। जिसकी वजह से थहर के चौराहों पर बुरी तरह जलजमाव देखने को मिला है। अस्सी चौराहा भी इससे अलूता नहीं रहा है।

लंका से सोनारपुरा होते हुए गोदौलिया जाने के बीच ही पड़ता है लोकप्रिय अस्सी का डलाका। अस्सी चौराहा भी यहाँ है। चौराहे की एक सड़क लंका को तो दूसरा गोदौलिया को जाता है। फिर एक मार्ग दुग्किंड की ओर तो दूसरा अस्सी घाट की ओर निकलता है। अस्सी चौराहे का क्षेत्र बहुत चौड़ा नहीं है। बेहद संकरा है। चौराहे के चारों ओर दुकानें हैं।

पान, लकड़ी, किटाना से लेकर मोबाइल



रिपेयरिंग तक की दुकान। वाराणसी के सबसे व्यस्त चौराहों में अस्सी चौराहा की गिनती होती है। पूरे दिन एक पल के लिए भी यह चौराहा शांत नजर नहीं आता। गाड़ियों की आवाज और राहियों की बकधून हमेशा गूंजती रहती है। चौराहे पर मौजूद दुकानों पर दुकानदार और खरीदार के बीच चलने वाली बनारसी लहजे की बातचीत भी माहौल को शांत नहीं होने देती है। लेकिन पिछले कुछ दिनों में (21 जून के बाद से) अस्सी का मजा पानी-पानी हो गया है।

जलजमाव ने बढ़ाई मुश्किलें -

बारिश की वजह से यहाँ भारी जलजमाव है। अस्सी चौराहा का जलजमाव थोड़ा खतरनाक भी है। क्योंकि चौराहे का जो रास्ता दुग्किंड की ओर जाता है, वो पूरी तरह भसा हुआ है। सड़क का एक किनार पूरी तरह से गड़े का शक्ल ले चुका है। आसपास के दुकानदार परेशान हैं। जलजमाव के कारण लोगों का आना जाना कम हो गया है। दुकानदारी को धक्का लग गया है। अस्सी चौराहे पर लगा पानी हादसे को खुला निमंत्रण है। कोई भी अनजान राहीं यहाँ दुर्घटना का शिकार हो सकता है। गौरतलब है कि वाराणसी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का संसदीय क्षेत्र है। इस लिहाज से जल निकासी की समस्या का अब तक दूर न होना सवाल खड़े करता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस रास्ते से अब तक कई बार गुजर चुके हैं। कई बार इसी सड़क और इसी अस्सी चौराहे से होकर उन्होंने रोड शो किए हैं। इस लिहाज से अस्सी चौराहा पर लगा पानी प्रधानमंत्री के बादों पर कीचड़ उछाल रहा है।



प्रधानमंत्री मोदी ने वाराणसी को क्योटो बनाने का वादा किया था। यह पहला मौका था जब बनारसियों की दिलचस्पी क्योटो को जानने में हुई थी। क्योटो को जानने के नाम पर बनारस की जनता इतना ही जान पाई कि "प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आने वाले दिनों में बनारस को जैसा बनाने वाले हैं, वैसा ही है क्योटो!"

कुछ दिनों बाद घाटों के सौंदर्यकरण को प्रधानमंत्री मोदी ने खूब बढ़ावा दिया। घाटों की सफाई, सीढ़ियों की मरम्मत और कई पुनर्निर्माण कार्य हुए। वाराणसी की कई मुख्य सड़कें खूब चमकाई गईं। सड़कों के डिवाइट की टंगाई पुताई हुई। सड़कों पर लाइट लगाकर विकास को दौशिनी दी गई। लेकिन अस्सी चौराहा पर हुआ जलजमाव प्रधानमंत्री के विकास की बत्ती फ्यूज कर

रहा है। इस बात में सिर्फ शब्दों का खेल ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक सत्यता भी है। विज्ञान कहता है कि पानी पड़ने से बिजली के सामान खराब हो जाते हैं।

2022 का उत्तर प्रदेश चुनाव नजदीक है। भारतीय जनता पार्टी और खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस चुनाव को लेकर सक्रिय हो चुके हैं। पश्चिम बंगाल में करारी शिक्षण झेलने के बाद भाजपा का आत्मविश्वास वैसे भी डगमगाया हुआ है। बंगाल की हार ने "ब्रांड मोदी" को ठेस पहुंचाया है। इसलिए भी पीएम मोदी हर हाल में यूपी पर एक बार फिर फतह द्वासिल करना चाहते हैं।

देखना होगा कि चुनाव के दिनों में इस बनारस के सौंकड़ों जर्जर और हादसे को आमंत्रित करते चौराहों की ढपटेखा बदलती

है या नहीं? हालांकि ये भी अटल सत्य है कि अब चुनावी मुद्दों में सड़क, शिक्षा और स्वास्थ्य सबसे पीछे होते हैं। उत्तर प्रदेश में ये बात और भी पुरजोर तरीके से लागू हो जाती है। गली-मोहल्लों और चौराहों की समस्याएं चुनावी नतीजों को भले प्रभावित न करती हों लेकिन आम जनजीवन पर कायदे से असर डालती हैं।

अस्सी चौराहा अपनी धीमी आवाज में अपने क्षेत्र के सांसद और देश के प्रधानमंत्री को पुकार रहा है। साथ में हिन्दी फिल्मों की तरह अरिजीत सिंह जैसी ही किसी आवाज में एक गीत बज रहा है: ये अस्सी का दरिया है और डूब के जाना है, कहां खोया है विकास, मुझिके इसे पाना है!



बेटोजगार युवा और मोदी सरकार!



विकास श्रीवास्तव

देश भर में मोदी सरकार की नीतियों की वजह से पढ़े लिखे बेटोजगारों की गिनती हट साल बढ़ती जा रही है। कोटाना के चक्कर में लाखों छोटे व्यापार व कारखाने बंद हुए हैं और उन की जगह विशाल कारखानों ने ले ली या बाहरी देशों के सामान ने ले ली है। इन में काम कर रहे औसत समझ के पढ़े लिखे युवा अब बेकार हो गए हैं। ये ऐसे हैं जो अब खेतों में जा कर काम भी नहीं कर सकते। खेतों में भी अब काम करना गया है।

इन युवा बेटोजगारों को लूटने के लिए सैंकड़ों स्टैकेम साइटें बन गई हैं और धड़ाधड़ छाटसाएप मैसेज भेजे जाते हैं कि साइट पर आओ, औन लाइन फार्म भरो। बहुत बार तो औन लाइन फार्म भरते-भरते बैंक अकाउंट का नंबर व पिन भी ले लिया जाता है और जो बचेखुचे पैसे होते हैं, वे भी हड्डप लिए जाते हैं कुछ मामलों में युवाओं को सिक्यूरिटी के नाम पर थोड़ा सा पैसा किसी अकाउंट में भेजने को कहा जाता है। इन को चलाने वाले शातिर कुछ दिन अपना सिम बंद रखते हैं और फिर दूसरे फोन में लगा कर इस्टेमाल करने लगते हैं। पुलिस के पास शिकायत करने वालों की सुनने की फुरसत नहीं होती।

आज 20 से 25 साल का हट चौथा युवा यदि

पढ़ नहीं रहा तो बेटोजगार है। जो काम कर भी रहे हैं वे आधारधूरा कार्य कर रहे हैं। उन की योग्यता का लाभ उठाया नहीं जा रहा।

मां-बाप पर बोझ बने ये युवा आज की पढ़ाई का कमाल है कि अपने को फिर भी शहंशाह से कम नहीं समझे और स्मार्ट फोन लिए टिकटौक जैसे वीडियो बना कर खुद को सफल समझ रहे हैं।

बेटोजगारी की यह समस्या बहुत खतरनाक हो सकती है। आज से पहले युवाओं को कहीं न कहीं कुछ काम मिल जाता था। किसी को सेना में, किसी को ट्रक में क्लीनर का, किसी को खेत पर। लेकिन अब पढ़ने के बाद इन सब नौकरियों को अछूत माना जाने लगा है। यह और परेशानी की बात है। घर वालों से लड़ाग़ड़ कर झटके पैसों को खर्च कर के आज कम चल रहा है पर कल जब मां-बाप खुद दिटायर होने लगेंगे तब क्या होगा पता नहीं।

आज जब बच्चे होते हैं तो पिता की आयु वैसे ही 25-30 की होती है और जब तक बच्चा बड़ा होता है, पिता 50 के आसपास हो जाता है और वह जो भी काम कर रहा होता है उस में आधा अधूरा रह जाता है। वह अपना और बच्चों का बोझ नहीं संभाल सकता।

बहुत मामलों में तो दकियानूसी मां-बाप

बेटोजगार बेटे-बेटी की शादी भी कर देते हैं। कहीं से भी पैसों का जुगाड़ कर मोटा पैसा शादी में खर्च कर दिया जाता है और यदि कोई काम नहीं मिले तो रातदिन रोना ही रोना रहता है।

मोदी सरकार ने 2-4 साल कुछ युवाओं से भगवा धारण कर वसूली का अच्छा काम करवाया था पर वह भी अब फीका पड़ने लगा है। मंदिरों के बंद होने से तो एक बड़े अधपढ़े युवाओं के हिस्से में बेकारी छा गई है। औनलाइन व्यापार ने थोड़ी सी नौकरियां दी हैं पर उस में इतना कंपीटीशन है कि हर रोज आमदनी कम हो रही है और जोखिम बढ़ रहा है। दिक्कत यह है कि देश में ऐसे कारखाने न के बराबर लग रहे हैं जिन में बेटोजगारों की खपत हो, जो भी काम हो रहा है वह विदेशी मरीनों से हो रहा है जहां बेटोजगारी की परेशानी कम है।

भारत सरकार जल्दी ही कुंभ जैसे और प्रोग्राम करवाए जाना लोगों को नंगे रह कर जीना सिखाया जाए क्योंकि अब बड़ी गिनती में पढ़े-लिखे नौजवानों और लड़कियों के लिए जानवरों की तरह ही रहना सीखना होगा। अन्यथा यह अंधभक्ति छोड़कर रोजगार जैसे असली मुद्दों पर सरकार से सावल पूछना पड़ेगा, और अपने बोट का सही इस्टेमाल भी सीखना होगा।

न चोर हूँ, न चौकीदार हूँ, साहस मै तो बेटोजगार हूँ।

महामारी के इस भयंकर दौर में, कितना मुश्किल है वैक्सीन की अहमियत को समझना?



धीरेन्द्र प्रताप

सरकार जनवरी से है टीकाकरण को लेकर जागरूकता फैला रही है, कुछ हद तक न्यूज़ ब्रेक्ट ने भी ग्राउंड जीरो पर जाकर लोगों को कोविड-19 वैक्सीन लगवाने के लिए प्रेरित किया। लेकिन इसी बीच भारत के संदर्भ में हमें एक चिंताजनक खबर मिली कि यहाँ 60 साल से अधिक उम्र के लोगों में वैक्सीन लेने की रफ्तार धीमी पड़ गई है और लगभग 52 फीसदी बुजुर्गों ने टीके की अभी पहली खुराक तक नहीं ली है।

भारत में ऐसी स्थिति के बीच अब अमेरिका से टीकाकरण अभियान की कामयाबी का एक सुखद समाचार आया है। वहाँ एक अध्ययन में पाया गया है कि अब जितनी भी मौतें हो रही हैं, उनमें करीब 99 फीसदी वे लोग हैं, जिन्होंने कोविड-19 की वैक्सीन नहीं लगवाई थी। मई में 18,000 से अधिक अमेरिकियों ने इस वायरस के कारण अपनी जान गंवाई, मगर उनमें से करीब 150 लोग ही ऐसे थे, जिन्होंने टीके की दोनों खुराकें ले रखी थीं। गौर करने वाली एक अहम बात यह भी है कि जनवरी के मध्य में वहाँ योजाना औसतन 3,400 लोगों की जान जा रही थी। तब वहाँ टीकाकरण अभियान शुरू हुए एक महीना ही हुआ था। मगर आज वहाँ कोविड-19 के कारण मरने वालों की दैनिक संख्या 300 से नीचे आ गई है। मान्य आयु वर्ग के 63 प्रतिशत अमेरिकी एक खुराक और करीब 53 फीसदी दोनों टीके लगवा चुके हैं। अमेरिका से आए ये ब्योटे

टीकाकरण की अहमियत स्थापित करते हैं। हालांकि, ये यह भी बताते हैं कि अमेरिकी समाज में भी टीकों को लेकर संशय या दुराग्रह पालने वालों की कमी नहीं है।

बहुरहाल, वैक्सीन की प्रभावशीलता से जुड़ी इन जानकारियों का लाभ दुनिया भर की सरकारों को उठाना चाहिए और अपने टीकाकरण अभियान को गति देनी चाहिए। खासकर भारत के लिए यह काफी अहम है, क्योंकि न सिर्फ़ इसको तीसरी लहर की आशंकाओं को निर्मूल करना है, बल्कि असंख्य लोगों के भय, पूर्वान्देश को दूर कर उन्हें टीकाकरण केंद्रों तक लाना भी है। देश की विशाल आबादी को देखते हुए यह काफी चुनौतीपूर्ण काम है, लेकिन यह अनिवार्य है और अनिवार्यता का कोई विकल्प नहीं होता। भारत का टीकाकरण अभियान पहले ही विसंगतियों का शिकार होता है। एक तरफ़, इसके हिस्से में सर्वाधिक टीके लगाने वाले चंद देशों में शुमार होने की उपलब्धि है, तो वहीं टीके की कमी के कारण लोगों का टीकाकरण केंद्रों से मायूस लौटना भी है। एक ओर, सौ फीसदी टीकाकरण वाले गांव हैं, तो दूसरी ओर टीकों की बर्बादी भी है।

टीकों की दर, सुप्रीम कोर्ट का हस्तक्षेप और केंद्र-राज्यों में समन्वय की कमी जैसी बातों को एक तरफ़ रख भी दें, तो अब भी इसमें निरंतरता की कमी है। किसी दिन कोई राज्य लाखों टीके लगाने के कीर्तिमान रख रहा है, तो अगले ही दिन वह संख्या हुनराठों में सिमट जा रही है। नहीं! यह ड्रैवेंट मैनेजमेंट का विषय नहीं है, लोगों की जिंदगी और देश के भविष्य का गंभीर मसला है। इसलिए केंद्र और राज्य सरकारें इस अभियान को गति देते समय टीकों की आपूर्ति, निरंतरता और क्षेत्रफल का समान रूप से ख्याल रखें।

इस बात की अनदेखी नहीं की जा सकती कि जिस आयुर्वर्ग में अब तक कठीब सौ फीसदी टीकाकरण हो जाना चाहिए था, उसके 52 प्रतिशत लोगों को एक खुराक भी नहीं लगी है। अमेरिकी अध्ययन के नतीजे बता रहे हैं कि न सिर्फ़ सरकारों, बल्कि समस्त सामाजिक समूहों और संजग नागरिकों को अब यह मकसद बनाना पड़ेगा कि टीकाकरण अभियान जल्द से जल्द सफल हो, तभी भारत में भी कोविड-19 का दैत्य काबू में आ पाएगा।



महंगाई की मार से जनता परेशान!



निमाला पांडेय

कोविड-19 का देश झेल रहे देश को अब बेलगाम होती महंगाई का शिकाया होना पड़ रहा है। देश में पेट्रोल-डीजल के दाम बढ़ने का सिलसिला लगातार जारी है। पेट्रोल-डीजल के दाम में जबरदस्त इनाफा हुआ है। देश के ज्यादातर इलाकों में पेट्रोल 100 रुपये के करीब पहुंच गया है और अब डीजल भी सरक के करीब पहुंचने को आतुर है। देश में 9 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों (राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, जम्मू-कश्मीर, ओडिशा और लद्दाख) में पेट्रोल ने 100 रुपये प्रति लीटर का आंकड़ा पार कर लिया है। मेंद्रो शहरों में मुंबई, हैदराबाद और बैंगलुरु में पेट्रोल पहले ही 100 रुपये प्रति लीटर से ऊपर है और अब चेन्नई में दरें इस दिशा में बढ़ रही हैं। आपको बता दें कि बीते 2 महीनों में अबतक तेल की कीमतों में लगभग 30 बार बढ़ोत्तरी हुई है।



लगाती है। या कुछ यूं कहे कि पेट्रोल और डीजल की लड़ाई में सरकों तेल ने बाजी मार ली। आपको बता दें कि देश में लगे लॉकडाउन के कारण पहले से ही जनता परेशान है। लॉकडाउन के बाद से ही लोगों पर रोजगार का संकट मंडरा रहा है उपर से लगातार बढ़ती महंगाई का असर अब लोगों की थाली पर भी देखने को मिलने लगा है। थाली से अब सरकों का तेल गायब होने को तैयार है।

दोहरे सरक की ओर बढ़ा सरकों तेल-

लगातार बढ़ते पेट्रोल और डीजल की कीमतों के बाद सरकों के तेल ने बड़ी छलांग

मंत्री देते हैं ऊलजलूल बयान-

सरकों की बढ़ती कीमतों को लेकर जहां एक ओर जनता परेशान है वहीं बढ़ती

कीमतों के संबंध में कृषिमंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने जो सफाई दी है उससे स्थिति कुछ खास स्पष्ट नहीं हो पायी। बढ़ती कीमतों को लेकर कृषिमंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने अपने बयान में कहा कि सरकार ने तेल में मिलावट को बंद कर दिया है, जिसके कारण सरकों के तेल की कीमतों में उछाल आया है। अब प्रश्न ये उठता है कि क्या भारत की जनता अब तक मिलावटी तेल का सेवन कर रही थी और अगर जनता मिलावटी तेल का सेवन कर रही थी, तो क्या सरकार सो रही थी, क्योंकि पिछले 7 वर्षों से देश में भाजपा का शासन काल चल रहा है? फिलहाल सरकों के जवाब देने में अब बड़े नेता भी फंसते नजर आ रहे हैं और उल्टे सीधे जवाब बड़े ही बेबाकीं से दे रहे हैं। इन जवाबों को लेकर भाजपा का मानना है कि सरकों के तेल की बढ़ती कीमतों के कारण तिलहन और सरकों का काम करने वाले किसानों को फायदा पहुंचने वाला है। फिलहाल आगामी 2022 में विधानसभा चुनाव में महंगाई एक बड़ा मुद्दा होगा।



वैक्सीनेशन को लेकर कितनी जागरूक हैं कार्डी की जनता?



कोरोना काल में वैक्सीन को लेकर जागरूकता अभियान के बावजूद भी वैक्सीन से अभी परहेज कर रहे हैं पीएम के संसदीय क्षेत्र के लोग।

कोरोना डेल्टा प्लस का नया वेटिंग बस आने को तैयार है। कोरोना की गाइडलाइन का पालन कराने के लिए जागरूकता अभियान भी चलाया जा रहा है। थहर के चौराहों, पेट्रोल पम्पों, हास्पिटल व सरकारी कार्यालयों के बाहर बड़ी-बड़ी होडिंग विराजमान है, जिस पर बड़े अक्षरों में लिखा है 'धन्यवाद मोदी जी', मगर जागरूकता बस होडिंग्स तक ही सिमित रह गयी है। इस संबंध में जब लोगों से पढ़ताल की गयी तो पता चला कि लोगों में कोरोना वायरस का डर तो

है भगव वैक्सीन को लेकर लोग डर रहे हैं। लोगों के मुताबिक उनके मन में ये डर व्याप्त है कि कहीं वैक्सीन से उन्हें कोई नुकसान तो नहीं होगा। कई लोगों में यह भी आन्ति फैली है कि वैक्सीन से मर्दों में नपुंसकता हो जाएगी।

वाराणसी में विगत कई दिनों से वैक्सीन को लेकर लोग कितना जागरूक हैं, जब इसका पता लगाने की कोशिश की गयी तो पता चला कि अभी भी लोग वैक्सीन को लेकर हिचक रहे हैं। टीका लगवाने को लेकर लोगों के मन में विभिन्न प्रकार की भाँतियां फैली हैं। वैक्सीन को लेकर जो भाँतियां लोगों में मन में हैं उसको लेकर लोग वैक्सीन से किनारा कर रहे हैं। हालांकि

बहुत से लोग वैक्सीन लगवाने के पक्ष में भी दिखें। देश में वैक्सीनेशन को लेकर लोगों में जागरूकता आयी है और कईयों ने वैक्सीन की दोनों डोज भी लगवा ली है लेकिन अभी भी बहुत से लोग वैक्सीन लगवाने के इंतजार में हैं और रजिस्ट्रेशन कराकर अपनी बाटी आने का इंतजार कर रहे हैं।

आपको बता दें कि देशभर में कोरोना वायरस का कहर लगभग पिछले 16 माह से जारी है। महामारी के दौर में भारत ने जिस तरह से दूसरे देशों को मदद मुहैया कराई है, उसकी वजह से दुनिया भर में भारत की जमकर सराहना हो रही है।

पंचायत में महिलाओं का आरक्षण कहीं मजाक तो नहीं?



रवि पटेल

देशभर में महिलाओं के ही दिखती है।

अधिकारों को लेकर खूब बहस होती है। इसी देश में सैकड़ों साल से चली आ रही सती प्रथा का अंत सन 1829 में राजा राममोहन राय की अगुआई में हुए आंदोलन के फलस्वरूप अंग्रेजों ने कानून बनाकर किया। इस आंदोलन ने महिलाओं के ऊपर हो रहे अत्याचार पर सबका ध्यान खिंचा। यह महिलाओं के साथ सबसे कूर अत्याचारों में से एक था। आज भी महिला व पुरुष के बीच गहरी खाई है। इसी खाई को पाटने के लिए आधी आबादी को भारत सरकार ने कई सालों के संघर्ष के बाद संसद के जरिए महिलाओं को 33 फ़िसारी आरक्षण दिया। महिलाओं को पंचायत चुनाव में आरक्षण इसलिए मिली ताकि ग्रामीण स्तर पर महिलाओं के सशक्तिकरण को मजबूत किया जा सके, लेकिन ज़मीनी स्तर पर तर्सीर कुछ अलग

भारत में क्या है स्थिति?

1952 में लोकसभा में 22 सीटों पर महिलाएँ चुनकर आई थीं, लेकिन इतने साल बाद भी 2014 में हुए चुनाव के बाद लोकसभा में सिर्फ 62 महिलाएँ ही पहुँच सकीं। यानी 62 वर्ष में 36% वृद्धि। 1952 में लोकसभा में महिलाओं की संख्या 4.4% थी जो 2014 की लोकसभा में लगभग 11% है, लेकिन यह अब भी वैशिक औसत से 20% कम है। हालाँकि भारत के आम चुनावों में महिला उम्मीदवारों की सफलता का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि यह पिछले तीन आम चुनावों से बेहतर रही है। 2014 के आम चुनावों में महिलाओं की सफलता दर 9% रही जो पुरुषों की 6% की तुलना में 3% ज़्यादा है। लेकिन गांव की सच्चाई जानकर आप हैठान हो जायेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी में महिलाओं की

पंचायत में स्थिति पर जो जानकारी सामने आई है, वह वाक़द आपको हैठान कर सकती है। वाराणसी में आरक्षण के बूते महिलाओं ने पंचायत में एंट्री जकड़ मार ली है लेकिन खुले तौर पर काम करना या स्वतंत्र निर्णय लेना दूर की कोड़ी है। अब भी उन्हें घर से निकलने का मौका तक नहीं मिला है। गांव के लोगों को लगता है कि पंचायत की मुखिया महिला नहीं बल्कि उनके पति हैं जबकि प्रधान महिला होती हैं। गांव में प्रधान पुरुष को ही कहकर पुकारा जाता है, उनके पति घर से निकल कर सरपंच के जिम्मेदारी का निवाह करते हैं। पर्नी को कानों कान खबर नहीं होती कि पंचायत में क्या काम हो रहा है, बस महिला इस काम को जानती है कि उसे कब और कहां हस्ताक्षर करना है। यदि हस्ताक्षर वाला झगड़ा नहीं होता तो महिला का कहीं नामोनिशान नहीं होता।





जिस भी ग्राम सभा में महिला प्रधान है वहां या तो उनके पति या उनके ससुर अथवा उनके जेठ खुद ही एक पद का सृजन कर लेते हैं जिसे वो प्रधानपति या प्रधान प्रतिनिधि नाम देते हैं।

जब हमने पंचायत में हो रहे कार्यों का विवरण महिला प्रधान से जानने की कोशिश की तो हमेशा यहीं बताया गया कि महिला प्रधान पत्रकारों का सामना नहीं कर सकती क्योंकि वह कम पढ़ी-लिखी अथवा शर्मिले रूबार की होती है, उनके स्थान पर उनके पति या प्रतिनिधि बड़े चार से बात करते हैं तथा हर कार्य का बखूबी विवरण भी प्रस्तुत करते हैं।

न्यूज बकट की टीम जब टोहनिया विधानसभा क्षेत्र में पहुंची तो कोटवा गांव में हमने एक मुस्लिम महिला प्रधान के घर जाकर जानकारी लेनी चाहीं लेकिन वहां महिला प्रधान का कुछ भी आता-पता नहीं था। पूरा कामकाज उनके पति ही संभाल रहे, उनसे सवाल किया गया कि क्या महिला

कभी बाहर निकलती है तो जो जवाब आया उसे सुनकर आप दांतों तले उंगली दबा लेंगे। उनका कहना था कि -

"हमारे यहां तो महिलाएं पर्दे से बाहर ही नहीं निकलती, आरक्षण नहीं होता तो कभी भी महिला को पंचायत की राजनीति में आने ही नहीं दिया जाता।"

वो तो भला हो सरकार का जिसके द्वारा आरक्षण देकर महिलाओं को कम से कम इतनी इज्जत दे दी गई कि उन्हें लोग कागजों पर ही सही प्रधान मानते तो हैं।

ऐसे ही कुछ प्रधान पतियों ने तो यहां तक कह दिया कि "अगर महिला जाकर किसी भी सभा में बोल भी दे तो उसकी बात का लोग खिल्ली उड़ा देंगे, उन्हें मानेगा कौन?"

ऐसी ही सौच को भारत में पुरुष प्रधान मानसिकता कहा गया है, इस मानसिकता को खत्म किया भी जा सकता है, ऐसा सौचना ही अपने आप में एक मजाक है।

वहीं कुछ एक गांव ऐसे भी मिलें जहां

महिलाओं ने कम पढ़े लिखे होने के बावजूद कम से कम कैमरे पर आने की हिम्मत जुटाई। इनमें शिवपुर विधानसभा क्षेत्र में सथवां, अम्बा और टोहनिया विधानसभा क्षेत्र में अखरी, देउठा की महिला प्रधान मुख्य रूप से शामिल हैं। इन लोगों ने कैमरा का सामना निर्भीक होकर किया। लेकिन अन्य गावों के जो आंकड़े सामने आए हैं, अगर उन्हें ही आधार मान लिया जाए तो इस बात में दम है कि 95 फीसदी आरक्षण महिलाओं के नाम पर पुरुष ले रहे हैं। तब इस आरक्षण के मुद्दे पर महिलाओं के साथकिकरण का छिंडोरा पीटने वाले सामाजिक कार्यकर्ता, सामाजिक संस्था, व तथाकथित बुद्धिजीवी अपने वातानुकूलित कमरे में बैठकर एजेंडा तय करने लग जाते हैं। जबकि हालात से सभी अवगत हैं कि जमीन पर हकीकत क्या है! महिलाओं के नाम पर यह एक मजाक नहीं तो और क्या है? भारत सरकार का मजाक, भारत की संस्थाओं का मजाक, भारत के संविधान का मजाक, और भारत के लोकतंत्र में आस्था रखने वाले जनता का मजाक!

बंपर सेल की तरह 21 जून को देश में हुआ टीकाकरण, अगले दिन लुढ़क गया ग्राफ, हुआ इवेंट मैनेजमेंट?



जय पाल

21 जून का दिन भारत के लिए कई मामलों में खास रहा। एक तरफ इस दिन देशभर में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की धूम रही। तो दूसरी ओर कोटोना के टीकाकरण की भी धूम रही। कोविड-19 टीकाकरण के मामले में भारत ने बड़ी उपलब्धि हासिल की है। अब तक मंद गति से चल रही टीकाकरण को मानो 21 जून को पंख लग गए। देशभर में 21 जून को लगभग 90 लाख लोगों को कोटोना की टीका लगाई गई। टीकाकरण से जुड़ी केंद्र सरकार की वेबसाइट कोविन वेबसाइट के मुताबिक कुल 90,86,514 लोगों को वैक्सीन लगाई गई। इनमें 82 लाख से अधिक (82,60,848) लोगों को कोटोना टीके की पहली खुटाक लगाई गई है। जबकि 8 लाख से ज्यादा (8,25,666) लोगों को टीके की दूसरी खुटाक लगाई गई।

नई टीकाकरण नीति का असर -

गौरतलब है कि 21 जून से भारत में नई टीकाकरण टणनीति अपनाई जा रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने पिछले भाषण में यह बात कही थी कि '21 जून से केंद्र सरकार नए टीकाकरण नीति को लागू करेगा।' जिसके मुताबिक देश में 18 वर्ष से अधिक उम्र के हर व्यक्ति को मुफ्त कोटोना टीका लगाई जा रही है।

केंद्र सरकार की इस नई टीकाकरण नीति में सबसे बड़ा बदलाव है टीके की खरीद और वितरण को लेकर। आज से देश के हर राज्य में केंद्र सरकार द्वारा भेजी गई कोटोना टीका लगाई जा रही है। केंद्र सरकार ही टीका बनाने वाली कंपनियों से खरीदारी कर रही है। फिर एक तय मानक के अनुसार सभी राज्यों को टीके की खेप भेजी जा रही

है। जाहिर है कि इससे पहले तक राज्य सरकारें खुद कोटोना टीका खरीद रही थीं। माना जा रहा है कि केंद्र सरकार द्वारा हो रही वितरण के कारण टीकाकरण में यह तेजी आई है।

अगले दिन लुढ़क गया टीकाकरण का ग्राफ -

केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार अपने 'इवेंट मैनेजमेंट' के लिए अक्सर आलोचनाएं झेलते रहती हैं। नरेंद्र मोदी सरकार किसी भी मुद्दे को लेकर इवेंट मैनेजमेंट और हेडलाइन मैनेजमेंट करने से बिलकुल नहीं चूकती है। 21 जून के दिन महा टीकाकरण के साथ भी

कर रही थी। सरकार की यह मंथा थी कि 21 जून के दिन टीकाकरण का रिकॉर्ड बनाया जाए। इसीलिए 21 जून से पहले टीका लगाना कम किया गया था। सरकार की ही वेबसाइट कोविन के अनुसार 20 जून को पूरे भारत में सिर्फ 29,37, 503 लोगों को वैक्सीन लगी थी। 17 जून, 18 जून व 19 जून की भी रिपोर्ट इसी आंकड़े के आसपास घूमती नजर आती है। 21 जून को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने टीकाकरण को लेकर द्वीप किया। उन्होंने अपने द्वीप में उस दिन के रिकॉर्ड को लेकर खुशी जताई। मोदी सरकार के कई मंत्रियों ने अपनी ही सरकार और खासकर पीएम मोदी की पीठ बड़े जोर



यही हुआ। एक ही दिन में नब्बे लाख से अधिक लोगों को टीका लगाकर रिकॉर्ड बनाने के अगले दिन टीकाकरण का ग्राफ लुढ़क गया। 22 जून के दिन पूरे देश में 54 लाख से अधिक (54,22,891) लोगों को ही कोटोना की वैक्सीन लगाई गई। जो कि 21 जून के मुकाबले बहुत कम है। 22 जून को 47,88,927 लोगों को ही की पहली खुटाक लग सकी। जबकि 6,33,964 लोगों को टीके की दूसरी खुटाक लगाई गई।

21 जून की तैयारी केंद्र सरकार कई दिनों से

से थपथपाई हालांकि केंद्र सरकार और उसके किसी मंत्री ने अब टीकाकरण के गिरते ग्राफ को लेकर कोई बयान नहीं दिया है। सावल है कि क्या 21 जून को भारी संख्या में टीकाकरण रिकॉर्ड बनाने और हेडलाइन मैनेजमेंट के लिए ही यह सब किया गया? केंद्र सरकार के लिए टीकाकरण और लोगों की जान ज्यादा मायने रखती है या फिर अपनी खुशामद में लिखे गए सुंदर हेडलाइन? जिसके मैनेजमेंट के लिए टीकाकरण की प्रक्रिया को इस तरह से डिजाइन किया गया।

क्या पुढ़षों में बांझपन लाता है कोरोना का टीका? जानिए स्वास्थ्य मंत्रालय का जवाब!



कोरोना वैक्सीन लेकर अफवाहों और लोगों में जारी भ्रम के बीच केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय न बीते माह फिर एक बार दोहराया है कि कोरोना टोधी वैक्सीन बिल्कुल सुरक्षित और असरदार है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि वैक्सीन को लगवाने से पुढ़षों और महिलाओं में बांझपन का शिकार होने का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। मंत्रालय ने आगे कहा कि कोरोना वैक्सीनेशन को लेकर जारी अफवाहों पर चिंता जताई गई है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि कोरोना वैक्सीनेशन को लेकर आई कुछ खबरों में नहीं, हेल्प वर्कर्स और फ्रंट लाइन वर्कर्स के एक वर्ग ने विभिन्न अंधविश्वासों व मिथकों को उजागर किया है।

दरअसल, मंत्रालय की ओर से कहा गया कि पोर्टल पर पोस्ट एक एफएक्यू के जवाब में

साफ किया गया कि कोरोना वायरस के खिलाफ मौजूद एक भी वैक्सीन प्रजनन क्षमता को प्रभावित नहीं करती। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि सभी वैक्सीनों का परीक्षण पहले जानवरों और फिर इंसानों पर किया जाता है। ताकि शुरुआत में ही वैक्सीन के साइड इफेक्ट के बारे में पता चल जाए।

मंत्रालय की ओर से बताया गया कि परीक्षण के दौरान पूरी प्रमाणिकता मिलने के बाद ही इसको इंसानों के लिए अधिकृत किया जाता है।

स्वास्थ्य मंत्रालय के बयान के अनुसार कोरोना वैक्सीनेशन की वजह से बांझपन के बारे में फैलाए जा रहे झूठ को टोकने के लिए भारत सरकार ने यह साफ किया है कि

इसका कोई भी वैज्ञानिक प्रमाण मौजूद नहीं है। कोरोना वैक्सीन पुढ़षों और महिलाओं में बांझपन का कारण नहीं बन सकता। कोरोना का टीका पूरी तरह से सुरक्षित और प्रभावी है।

आपको बता दें कि सरकार की ओर से जारी किए गए अंकड़ों के अनुसार अब तक कोरोना वैक्सीन की 80 लाख से ज्यादा डोज लगाई गई है। इतनी संख्या में हुए वैक्सीनेशन को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खुशी जताई है। पीएम मोदी ने हेल्प वर्कर्स का उत्साह बढ़ाते हुए द्वीप कर वेल डन कहा है। आपको बता दें कि केंद्र सरकार अब देश के हर नागरिक को मुफ्त वैक्सीन लगवा रही है।

प्रेग्नेंट महिलाओं को कब लगवाना चाहिए कोरोना टीका? पढ़िए स्वास्थ्य मंत्रालय का जवाब!

भारत दुनिया में सबसे ज्यादा कोरोना टीके लगवाने वाला देश बन गया है। इस बीच, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने प्रेग्नेंट महिलाओं के टीकाकरण को लेकर गाइडलाइन जारी कर दी है। इसके तीन दिन पहले ही सरकार ने कहा था कि गर्भवती महिलाओं को कोविड-19 टीका लगाया जा सकता है। अब केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने दिशानिर्देश जारी किए और कहा कि गर्भविष्टा से कोरोनावायरस संक्रमण का खतरा नहीं बढ़ता है।

गाइडलाइन में कहा गया है कि ज्यादातर गर्भवती महिलाएं असिंटोमेटिक होंगी या उनमें हल्के लक्षण नजर आएंगे, लेकिन उनका स्वास्थ्य तेजी से बिगड़ सकता है और इससे भूषण भी प्रभावित हो सकता है। यह

महत्वपूर्ण है कि वे कोविड-19 से खुद को बचाने के लिए सभी सावधानी बरतें, जिसमें कोविड के खिलाफ टीकाकरण भी शामिल है। इसलिए यह सलाह दी जाती है कि गर्भवती महिला को कोविड-19 के टीके लेने चाहिए।

स्वास्थ्य मंत्रालय ने यह भी बताया कि गर्भविष्टा के दौरान यदि कोई महिला कोविड-19 से संक्रमित हो गई है, तो उसे प्रसव के तुरंत बाद टीका लगाया जाना चाहिए। क्या कोविड-19 टीकों का कोई दुष्प्रभाव है, इस पर मंत्रालय ने कहा कि उपलब्ध कोविड-19 टीके सुरक्षित हैं और टीकाकरण गर्भवती महिलाओं को कोविड-19 बीमारी से बचाता है।

किसी भी दवा की तरह एक टीके के दुष्प्रभाव हो सकते हैं जो सामान्य रूप से हल्के होते हैं। वैक्सीन का इंजेक्शन लगवाने के बाद महिला को हल्का बुखार हो सकता है, इंजेक्शन वाली जगह पर दर्द हो सकता है या 1-3 दिनों तक अस्वस्थ महसूस हो सकते हैं।

गाइडलाइन में कहा गया है कि भूषण और बच्चे के लिए टीके के दीर्घकालिक प्रतिकूल प्रभाव और सुरक्षा अभी तक स्थापित नहीं हुई है। बहुत कम (1-5 लाख में से एक) गर्भवती महिलाओं को कोविड-19 टीकाकरण प्राप्त करने के 20 दिनों के भीतर कुछ लक्षणों का अनुभव हो सकता है, जिन पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता हो सकती है।



जुलाई में अक्षय कुमार की बेल बॉटम के साथ आएंगी ये 6 नई फिल्में, पर्दे पर होगा एकरान!

कोविड-19 की दूसरी लहर के संघातिक होने के पूर्वानुमान पहले से ही चिकित्सक और वैज्ञानिकों ने लगाए थे। उन्होंने दुनिया को और दुनिया की सरकारों को उन्होंने चेताया भी था किंतु जिन्होंने पहले से तैयारी की वह इसके असर से खुद को बचा सके। जिन्होंने तैयारी नहीं की वे बुरी तरह चपेट में आगये।

दुनिया के महत्वपूर्ण चिंतकों की राय है कि भारत में प्रति दस हजार की आबादी पर केवल 8.5 बिस्तर ही अस्पतालों में उपलब्ध हैं और इसी तरह प्रति दस हजार की आबादी पर मात्र आठ चिकित्सक। इसके बावजूद बेजान हेल्प केयर डिलीवरी सिस्टम हमें नाक चिढ़ाता है। एक ताजा रिपोर्ट बताती है कि भारत में स्वास्थ्य बीमा 80 प्रतिशत आबादी की पहुंच में नहीं है, 68 प्रतिशत आबादी आवश्यक दवाओं की पहुंच से दूर है।

आज भी स्थिति यह है कि प्रत्येक 25 व्यक्तियों में से केवल एक व्यक्ति को ही हम वैकसीन लगा सके हैं जबकि ब्रिटेन में हर दो व्यक्ति में से एक और अमेरिका में हर तीन व्यक्ति में से एक वैकसीनेट हो चुका है। मरीजों की बेतहाशा बढ़ती संख्या के बीच अस्पतालों में आईसीयू बेड, ऑक्सीजन सिलिंडर और ऐमडेसिविट दवा की भारी कमी की खबरें कई राज्यों से आ रही हैं।

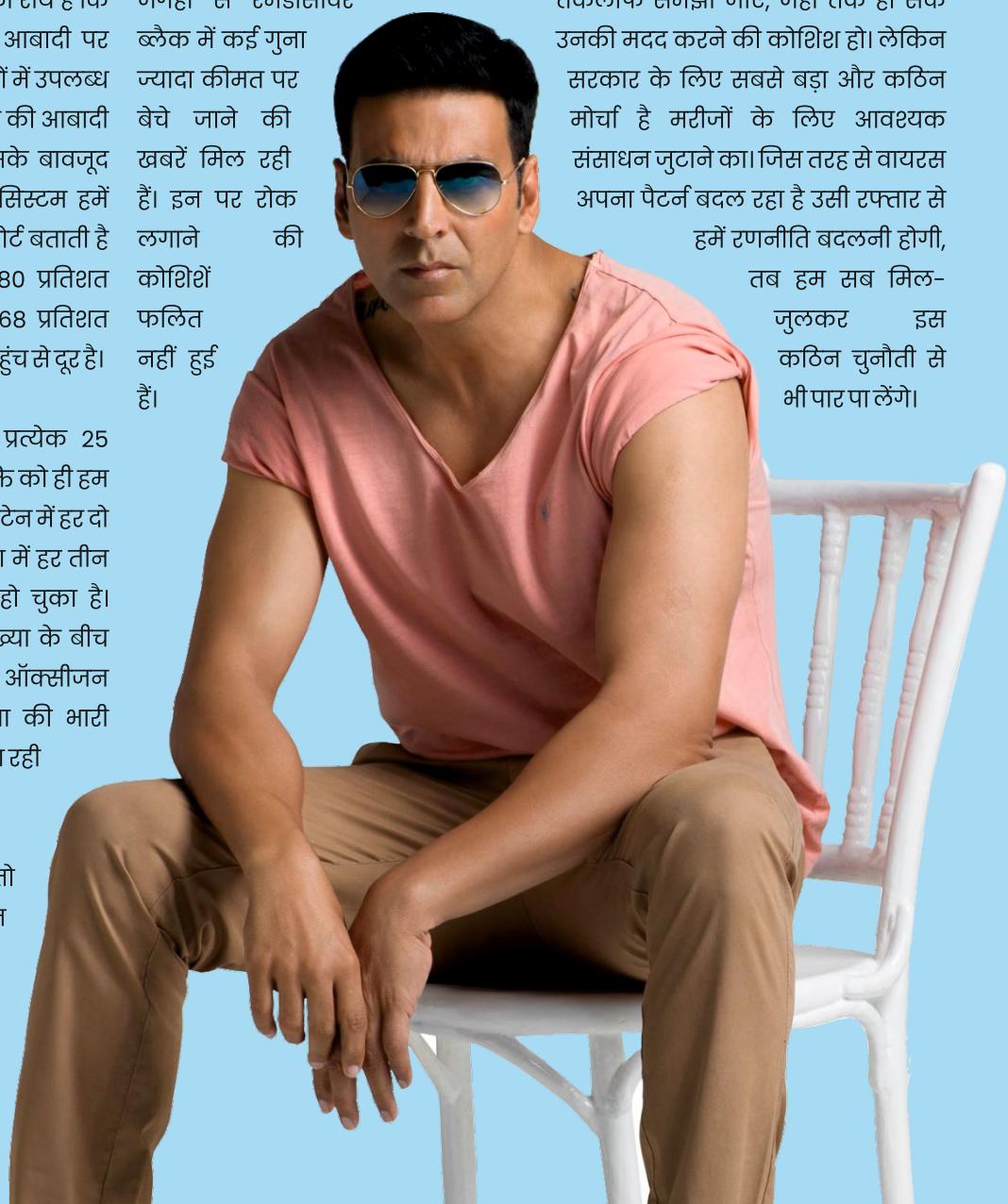
दिल्ली सरकार ने तो आधिकारिक तौर पर इन सबकी कमी की बात मानी है। कई राज्यों से ऐसी अपुष्ट रिपोर्टें आ रही हैं। इस ढांचागत कमी के बावजूद भी स्वास्थ्य सेवाओं के संबंध में फैसला लेने वाले हमारे

जनप्रतिनिधि और सरकारें इसे राजनीतिक और कानून व्यवस्था की समस्या की तरह प्रबंधित कर रही हैं जिसका शिकार आम जनता हो रही है जिसे संविधान ने जीवन रक्षा करने का मौलिक अधिकार दिया है।

असफल राजनैतिक प्रथासनिक सिस्टम के साथ-साथ हमें हमारे सामाजिक ढांचे की असफलता पर भी विचार करना होगा। कई जगहों से ऐमडेसिविट ब्लैक में कई गुना ज्यादा कीमत पर बेचे जाने की खबरें मिल रही हैं। इन पर योक लगाने की कोशिशें फलित नहीं हुई हैं।

आईसीयू बेड की कमी से निपटने के भी प्रयास हुए हैं, लेकिन वे काफी नहीं। ऐसे संकटपूर्ण हालात में जहां आवश्यक कदमों में असामान्य तेजी लाने की ज़रूरत होती है, वहीं शांति, समझदारी और संयम बरतने की आवश्यकता भी बढ़ जाती है। सरकार उस मोर्चे पर पूरी कड़ाई बरते।

लॉकडाउन जैसे कदमों से त्रस्त लोगों की तकलीफ समझी जाए, जहां तक हो सके उनकी मदद करने की कोशिश हो। लेकिन सरकार के लिए सबसे बड़ा और कठिन मोर्चा है मरीजों के लिए आवश्यक संसाधन जुटाने का। जिस तरह से वायरस अपना पैटर्न बदल रहा है उसी रफ्तार से हमें रणनीति बदलनी होगी, तब हम सब मिल-जुलकर डिस्ट्रिब्यूशन के लिए चुनौती से भी पार पालेंगे।



सुपरहिट फिल्मों में काम करने वाले ये एकत्र सारे रह चुके हैं बी-ग्रेड मूर्ती का हिस्सा, अब लेते हैं करोड़ों में फीस!



हर सितारा जब फिल्म जगत में कदम रखता है तो वो यही सोचता ही कि वो एक दिन बहुत बड़ा अभिनेता बनेगा। हालांकि बड़े-बड़े कलाकारों की जिंदगी में भी एक ऐसा दौर आता है जब उन्हें पेसा या फिल्मों की कमी के कारण बी-ग्रेड की फिल्मों करनी पड़ती हैं। बी-ग्रेड फिल्मों की जब भी बात की जाती है तो हर शब्द के मन में एक अलग धारणा बन जाती है। हालांकि बी-ग्रेड फिल्मों को आप परिभाषित नहीं कर सकते। लेकिन अधिकांश लोगों के मन में बी-ग्रेड फिल्मों को लेकर जो धारणा हैं वो ये हैं कि इन फिल्मों का बजट कम होता है और फिल्म के पोस्टर से ही ये अंदाजा हो जाता है कि बी-ग्रेड फिल्मों में काम करने वाले सितारे किसी मजबूटी में फिल्म में काम कर रहे होंगे।

हालांकि अब ऐसा दौर हैं जहां फिल्मों को कंटेंट से नहीं बल्कि अभिनेता के बॉलीवुड कद से मापा जाता है। किसी बहुत बड़े सितारे की फिल्म भले ही बॉक्स-ऑफिस पर असफल हो जाए लेकिन उसे बी-ग्रेड की फिल्म नहीं कहा जाता। बी-ग्रेड की फिल्मों को लेकर चाहे कुछ भी कहा जाता हो, लेकिन सच्चाई ये है कि बी-ग्रेड फिल्मों का व्यापार हर दिन के साथ बढ़ता जा रहा है। बॉलीवुड के कई ऐसे बड़े सितारे भी हैं जिन्होंने या तो अपने करियर की थुकात बी-ग्रेड फिल्मों से की है या फिर अच्छी फिल्में न मिलने की वजह से उन्हें बी-ग्रेड फिल्में करनी पड़ी। इस आर्टिकल में आज हम आपको उन्हीं बड़े सितारों के बारे में बता रहे हैं जो बी-ग्रेड कहीं जाने वाली फिल्मों का हिस्सा रह चुके हैं।

अमिताभ बच्चन -

बॉलीवुड में अमिताभ बच्चन को शहंशाह, महानायक, बिंग बी कई नामों से जाना जाता है। बच्चन साहब किसी पहचान के मोहताज नहीं है। कई सालों से बॉलीवुड इंडस्ट्री में उनका दबदबा है। लेकिन एक समय ऐसा था जब अमिताभ बच्चन की फिल्में बुरी तरह फलाँप हो रही थीं। उसी दौरान बिंग-बी ने फिल्म बूम में काम किया। उनकी इस फिल्म को बी-ग्रेड की फिल्म कहा जाता है।



मनोज तिवारी की सिंगर तो रवि किशन की पत्नी हैं हाउस वाइफ, जानिए क्या करती हैं इन 6 भोजपुरी एक्टर्स की पत्नियां?

भोजपुरी एक्टर्स अब काफी लोकप्रिय हो चुके हैं। भोजपुरी के ऐसे तमाम एक्टर्स हैं जो देश के कई हिस्सों में पसंद किये जाते हैं। अब इन एक्टर्स की फिल्मों के साथ ही इनका निजी जीवन भी चर्चा में रहता है। आइए जानें कुछ पॉपुलर भोजपुरी एक्टर्स की पत्नियों से जुड़ी कुछ बातें -



भोजपुरी एक्टर विक्रांत सिंह की शादी मोनालिसा से हुई है। मोनालिसा भी भोजपुरी की पॉपुलर एक्ट्रेस हैं। कुछ रिपोर्ट्स बताती हैं कि अभिनेत्री मोनालिसा विक्रांत के साथ अपनी शादी से 6 जाल पहले से लिव-इन रिलेशनशिप में रह रही थीं।



रवि किशन की पत्नी का नाम प्रीति है। प्रीति हाउस वाइफ हैं। बताया जाता है कि रवि किशन की मुलाकात उनकी पत्नी प्रीति से 11वीं क्लास में ही हो गई थी। काफी दिनों बाद रवि किशन ने प्रीति से 1996 में शादी कर ली। प्रीति किशन रवि किशन के संघर्ष के दिनों में पूरे वक्त साथ रहती थीं। रवि और

प्रीति किशन की तीन बेटियां और एक बेटा हैं।

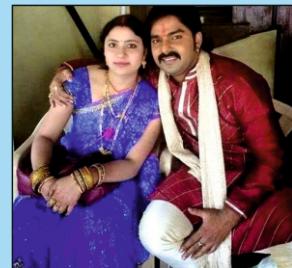


भोजपुरी सिंगर और भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी की मुंहबोली बहन प्रतिमा पांडे उर्फ रानी तिवारी से मनोज तिवारी ने सात फेरे लिए। रानी और मनोज तिवारी की एक बेटी हैं। बेटी का नाम ऋति है। मनोज तिवारी अपनी बेटी ऋति के काफी करीब हैं। शादी के कुछ सालों बाद रानी और मनोज तिवारी के बीच चीजें बिंगड़ने लगीं। रानी ने उन्हें तलाक देने का फैसला कर लिया। साल 2012 में मनोज तिवारी और रानी तिवारी का तलाक हो गया। पहली पत्नी से तलाक के करीब 8 साल बाद मनोज तिवारी ने दूसरी शादी रचाई। उनकी दूसरी पत्नी का नाम सुरभि तिवारी है। सुरभि तिवारी भी भोजपुरी सिंगर हैं। सुरभि मूल रूप से पटना की रहने वाली हैं। 31 दिसंबर 2020 को सुरभि ने एक प्यारी दी बेटी को जन्म दिया।



खेसारी लाल यादव की लाइफ पार्टनर का

नाम चंदा देवी है। चंदा बहुत ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं हैं और घर पर ही रहकर परिवार संभालती हैं। खेसारी जब लगभग 20 वर्ष के थे, तभी उनकी शादी चंदा देवी नाम की एक लड़की से 11 जून 2006 को कर दी गई थी। तब से आज तक चंदा देवी ने खेसारी लाल का हर सुख-दुख में साथ दिया।



भोजपुरी सिंगर और एक्टर पवन सिंह की पहली शादी दिसंबर 2014 में नीलम सिंह से हुई थी। 2015 में नीलम के आत्महत्या कर लेने के बाद उन्होंने मार्च 2018 में दूसरी शादी ज्योति सिंह से कर ली। ज्योति सिंह पेशे से टीचर थीं। हालांकि शादी के बाद उन्होंने नौकरी छोड़ दी है।



दिनेश लाल यादव उर्फ निरहुआ की शादी 2000 में हो गई थी। उनकी पत्नी का नाम मंथा देवी है और उनके तीन बच्चे हैं। बेटी का नाम अदिति हैं जबकि बेटों के नाम आदित्य और अमित हैं। निरहुआ की पत्नी भी हाउस वाइफ हैं। निरहुआ की वाइफ लाइम लाइट से दूर रहती हैं, जिसकी वजह से उनके बारे में कोई नहीं जानता और लोग पार्की हेंगड़े और आमपाली दुबे को ही निरहुआ की पत्नी मानते हैं, लेकिन यह सच नहीं है।

गांवों की समस्याओं को लेकर काथी विद्यापीठ ब्लॉक प्रमुख के साथ खास वार्ता, पढ़े पूरी खबर।

लगातार बदलती सरकारों के बाद भी गांवों की स्थिति में सुधार आखिर क्यों नहीं हो पा रहा है, इसकी जानकारी के लिए न्यूज बकेट की टीम लगातार ग्राउंड रिपोर्टिंग कर रही है। गांवों की जमीनी हकीकत जानने के लिए न्यूज बकेट की टीम ने काथी विद्यापीठ ब्लॉक के पूर्व ब्लॉक प्रमुख प्रवेश कुमार पटेल से बातचीत की, आइए जानते हैं कि आखिर गांवों के विकास में किस प्रकार की ढकावर्टें आती हैं? बातचीत के प्रमुख अंश-

प्रश्न - प्रमुख जी, आपने अपने 5 सालों के कार्यकाल के दौरान किस तरह से कार्ययोजनाओं को धरातल पर लाया?

काथी विद्यापीठ के ब्लॉक प्रमुख प्रवेश पटेल ने बताया कि सभी प्रधानों और बीड़ीसी को बुलाकर सालाना मीटिंग ली जाती है, जिसमें गांवों की तमाम समस्याओं से उन्हें लिखित पत्रक द्वारा अवगत कराया जाता है। उस पत्रक के अनुसार फिर बजट बनाया जाता है जोकि ब्लॉक का सीमित बजट होता है। उन्होंने आगे बताया कि उनके पास करीब 50 लाख रुपए का सालाना का बजट आया है मगर 93 गांवों की कार्ययोजनामें लगभग 10 करोड़ की लागत आएगी। यह लागत आये हुए बजट से बहुत ज्यादा है। इसलिए विकास की रफ्तार धीमी है। ब्लॉक प्रमुख ने आगे बताया कि इस समस्या से अवगत कराने के लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री को पत्र लिखा गया, ताकि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ डन समस्याओं का अपने अनुसार निष्ठारण कर सकें।

प्रश्न - गांवों में रास्तों की स्थिति सही नहीं है, इस समस्या का निष्ठारण कैसे होना चाहिए?



प्रवेश पटेल ने बताया कि उनके पास समस्याओं के निष्ठारण के लिए 4 इकाइयां होती हैं, जिनमें सांसद निधि, विधायक निधि, ब्लॉक निधि और ग्राम निधि सम्मिलित होता है। अगर यह चारों निधि चाहें तो गांवों की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। अगर पक्ष-विपक्ष का विषय छोड़ के सरकार मदद करे और सब साथ में आ जायें तो सारी परेशानियों का समाधान हो सकता है।

प्रश्न - गांवों में गंदगी और सीधर की समस्या से लोग संक्रमण का शिकार हो सकते हैं, गांव की इस समस्या का निष्ठारण कैसे होगा?

इस सवाल पर ब्लॉक प्रमुख ने बताया कि इसके लिए उन्होंने शासन से मांग किया है कि कर्मचारियों की संख्या बढ़ाई जाये, क्योंकि सीधर के सफाई के लिए कर्मचारी कम हैं। नगर आयुक्त कहते हैं कि उनके पास सुविधा नहीं है। उन्होंने वक्त मांगा है। प्रमुख जी आगे बताते हैं कि अगर वह इन समस्याओं को लेकर विपक्ष में होने के नाते धरना देते हैं तो उनपर मुकदमा कर दिया जाता है।

प्रश्न - गांवों में विकास कार्य प्रधानों के हाथों में होता है मगर कुछ प्रधान केवल अपने ही लोगों की सहायता कर रहे हैं, इसका निष्ठारण कैसे हो?

इस सवाल पर काथी विद्यापीठ के ब्लॉक प्रमुख ने कहा कि यह प्रधानों का व्यक्तिगत मामला होता है, प्रधान गांव का प्रथम नागरिक होता है। होता यह है कि मान लीजिये 40-60 का औसत है, अगर 60 प्रतिशत वाले चुनाव जीत गए तो 40 प्रतिशत वाले विपक्षी हो जाते हैं तो प्रतिद्वंद्विता की भावना से ऐसा होता है। मगर वह इसकी निंदा करते हुए सभी प्रधानों से अनुरोध करते हैं कि ग्राम प्रधान सब को लेकर चलें और बिना भेदभाव के जनता का विकास करें, क्योंकि जनप्रतिनिधि जनता से हैं, जनता उनसे नहीं है।

प्रश्न - लॉकडाउन के कारण गांवों में रोजगार की स्थिति बहुत भयावह हो गई है, इसके लिए क्या किया जा सकता है? इसका निष्ठारण कैसे होगा?

इस मुद्दे पर प्रमुख जी ने बताया कि प्रसाथन ने 20 लाख करोड़ का प्रस्ताव रख के बैंकों से कर्ज लेकर या उद्योग थ्रु़ करने की बात कही है। मगर ग्रामीण स्तर पर बैंकों से कर्ज लेने के लिए काफी दस्तावेजों को मांग की का रही है, जो ग्रामीण और छोटे व्यापारी मुहैया नहीं करा पा रहे हैं, जिससे उनको बैंकों से कर्ज नहीं मिल पाता है। इस मामले में पारदर्शिता के लिए बैंक सामने आकर बतानी होगी।





प्रश्न- मनरेगा के तहत अभी भी बहुत लोगों को कार्यनहीं मिल पा रहा है। सरकार इसको लेकर क्या कर रही है? गांवों में मनरेगा की स्थिति कब तक और कैसे सुधर पाएंगी?

इस प्रश्न पर प्रवेश पटेल ने कहा कि मनरेगा का पिछली बार का भी पैसा ठका हुआ है, इसको लेकर लोग असमंजस में हैं। प्रधानों द्वारा काम तो करवाया जा रहा है मगर ज्यादातर प्रधानों की आईडी जनरेट नहीं हो पा रही है। आईडी जनरेट होने में 6-6 महीने लग जा रहे हैं। ऐसे में कोई भी प्रधान कैसे काम करवाए? इस मामले में पारदर्शिता होनी चाहिए और सरकार को भी आईडी और अन्य समस्याओं के लिए नीचे के अधिकारियों से बात करनी चाहिए और इन समस्याओं का कारण पूछना चाहिए और इसका समाधान करना चाहिए।

प्रश्न- आज भी कई गांवों में महिलाओं के लिए जच्चा-बच्चा केंद्र नहीं है, इसके निपटाण के लिए क्या करना चाहिए?

इस मुद्दे पर प्रमुख जी के अनुसार सरकार को अपने अधिकारियों से बात करनी चाहिए। कई गांव में तो अस्पताल भी नहीं है, सड़कें भी खराब हैं। इस मामले को सरकार को संज्ञान में लेना चाहिए।

प्रश्न- किसानों को मिलने वाले 2000 रुपए आज भी कितने किसानों को नहीं नहीं मिले, इसके लिए क्या करना चाहिए?

प्रवेश पटेल के अनुसार ऐसा पारदर्शिता न होने के कारण हो रहा है। किसानों को इसकी जानकारी नहीं होती है, वह किससे पूछें? उन्हें यह सब चीजों की

जानकारी देने के लिए कोई चाहिए लेखपाल और कानूनगो के पास समय नहीं होता। अधिकारी इस मामले में सही से जवाब भी नहीं देते हैं। इसके लिए आशा या अन्य अधिकारी की नियुक्ति करनी चाहिए जो किसानों से सीधी बात कर सकें।

प्रश्न- सरकार 3-3 महीने का राशन लोगों को बांट रही है, मगर आज भी कितने लोगों के पास राशन कार्ड नहीं है, ऐसा क्यों?

ब्लॉक प्रमुख प्रवेश पटेल ने बताया कि गांवों में राशन कार्ड की बहुत बड़ी समस्या है। गांव के पूंजीपति कोटेदार से मिले होते हैं, जिससे यह समस्या होती है। ज्यादातर कोटेदार भी धोखाधड़ी करते हैं और पहले अंगूठा लगाकर फिर राशन बाद में देने की बात करते हैं और राशन उठा कर बेच देते हैं। जो वास्तव में गरीब हैं, उनको राशन नहीं मिल पा रहा और पूंजीपति लोग राशन उठा रहे हैं। अधिकारी इस मुद्दे पर कोई जवाब ही नहीं देते।

प्रश्न- गांव की सबसे बड़ी समस्या है अवैध कब्ज़े की, ग्राम सभा की जमीनों पर प्रधान की गिली भगत से अवैध कब्ज़ा हो जाता है, इसके निपटाण के लिए क्या करना होगा?

इस गंभीर सवाल पर प्रमुख जी ने बताया कि सरकारी विभाग के अधिकारियों को सरकारी जमीनों के लिए आगे आना पड़ेगा और ग्राम पंचायतों से इसका हिसाब मांगना

चाहिए। इन स्थानों पर बच्चों के लिए खेल का मैदान बनवाना चाहिए और बारातघर जैसी चीजें बनाना चाहिए। इसके लिए एसडीएम को आगे आने की जरूरत है।

प्रश्न- किसान छुट्टा पथुओं से परेशान है, इसके लिए क्या करना होगा?

छुट्टा पथुओं के मामले में ब्लॉक प्रमुख सरकार को धेरने लगें, उन्होंने कहा कि किसान पहले से ही त्रस्त है और सरकार दावा कर रही है कि हम किसानों का भला कर रहे हैं। इसमें सरकार पता नहीं कैसे किसानों का भला कर रही है। या तो छुट्टा पथु किसानों को नुकसान पहुंचा रहे हैं या किसान इन पथुओं को इकट्ठा करके रख रहे हैं लेकिन उनका पालन पोषण नहीं कर पार रहे हैं।

प्रश्न- इन समस्याओं के निवारण के लिए सरकार को क्या सुझाव देना चाहेंगे?

गांव के इन तमाम समस्याओं से निजात पाने के लिए काथी विद्यापीठ के ब्लॉक प्रमुख ने सरकार से मांग कि वह बदले की राजनीति न करें। अगर कोई आवाज उठाये तो उन पर मुकदमा न करें, बल्कि उनकी समस्याओं को सुनें। सरकार सबको एक साथ लेकर चले तभी गांव और देश का विकास संभव है।

इस अंक में बस इतना ही, आप अपने सुझाव हमे ई-मेल के जरिये साझा कर सकते हैं। हमारा ईमेल है - m@fivealphabets.com



प्रवेश पटेल
(ब्लॉक प्रमुख, काथी विद्यापीठ)

भारत और जापान की दोस्ती का प्रतीक है 'ठद्राक्ष कन्वेंशन सेंटर', शिवलिंग नुमा है आकार!



प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी में 'ठद्राक्ष कन्वेंशन सेंटर' बनकर तैयार हो गया है।

भारत और जापान की दोस्ती का प्रतीक माने जाने वाले 'ठद्राक्ष कन्वेंशन सेंटर' का उद्घाटन जापान और भारत द्वारा संयुक्त ठप से किया जाना है।

इस कन्वेंशन सेंटर का मुख्य आकर्षण है इसका आकार। बता दें कि जिस तरह इस कन्वेंशन सेंटर का नाम 'ठद्राक्ष' रखा गया है, उसी प्रकार इस कन्वेंशन को शिवलिंग नुमा आकार भी दिया गया है।

3 एकड़ में बने इस ठद्राक्ष कन्वेंशन की 150 गाड़ियों की पार्किंग की सुविधा के साथ

शिवलिंग नुमा दीवारों के चारों तरफ 109 ठद्राक्ष की आकृतियां उकेरी गयी हैं। बता दें कि यह देश का सबसे बड़ा कन्वेंशन सेंटर होगा, जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करेगा।

इस कन्वेंशन सेंटर का मुख्य ऑडिटोरियम इतना बड़ा है कि इसमें 1200 दर्शक एक साथ बड़े ही आगम से बैठ सकते हैं। दिव्यांगों के लिए हर लाइन में एक अलग स्पेस के साथ आगे की कुर्सियां पोर्टेबल बनायीं गयी हैं।

इसमें 200 लोगों के बैठने के लिए एक हॉल भी है। इसमें एक्सहिबिशन गैलरी के साथ लॉबी, ओपेन स्पेस, लैंड स्केपिंग की सुविधा भी उपलब्ध है।

वहीं इस कन्वेंशन सेंटर में पर्यटकों के लिए फूड फेरिटिवल और हैंडीक्राफ्ट प्रदर्शनी का आयोजन भी किया जाएगा।

वाराणसी के मंडलायुक्त दीपक अग्रवाल ने इस 'ठद्राक्ष कन्वेंशन सेंटर' को नगर निगम और जापान के बीच हुए समझौते का परिणाम बताया है।

न्यूजीलैंड ने अब तक 2 बार जीता आईसीसी टूर्नामेंट, दोनों ही बार भारत से छीनी द्रोफी!



न्यूजीलैंड ने भारत को विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) के फाइनल मुकाबले में हराने के साथ ही अपना दूसरा आईसीसी टूर्नामेंट जीता और इसके साथ ही वह क्रिकेट का ओवरऑल चैंपियंस बना। न्यूजीलैंड ने द टोज बाउल में खेले गए विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) के फाइनल मुकाबले के छठे और अंतिम दिन बुधवार को भारत को आठ विकेट से हराकर खिताब अपने नाम किया।

भारत ने दूसरी पारी में 170 रन बनाए और 138 रनों की बढ़त हासिल कर न्यूजीलैंड को जीत के लिए 139 रन का लक्ष्य दिया। इसके जवाब में न्यूजीलैंड की टीम ने दो विकेट पर 140 रन बनाकर मैच जीत लिया और

डब्ल्यूटीसी के पहले संस्करण का खिताब जीता।

न्यूजीलैंड की पारी में कप्तान केन विलियम्सन 89 गेंदों पर आठ चौकों की मदद से 52 रन और रॉस टेलर 100 गेंदों पर छह चौकों की मदद से 47 रन बनाकर नाबाद रहे। इनके अलावा डेवोन कॉनवे ने 19 और टॉम लाथम ने नौ रनों का योगदान दिया। भारत की ओट से रविचंद्रन अश्विन ने दो विकेट लिए।

न्यूजीलैंड ने इससे पहले साल 15 अक्टूबर 2000 में आईसीसी चैंपियंस द्रॉफी जीती थी, लेकिन उन्होंने अब डब्ल्यूटीसी के पहले संस्करण को जीत इतिहास रचा। गजब

संयोग ये है कि उस वर्क भी खिताबी मुकाबले में न्यूजीलैंड ने भारत को ही मात दी थी। यह मुकाबला अंत तक कड़ा रहा। भारत को हालांकि केन विलियम्सन और रॉस टेलर की जोड़ी को तोड़ना था, जिन्होंने तीसरे विकेट के लिए बड़ी साझेदारी की। चेतेश्वर पुजारा ने हालांकि फर्स्ट डिलिप में कैच छोड़कर मौका गंवाया।

पूरे मैच में बल्लेबाजी करना मुट्ठिकल था, लेकिन न्यूजीलैंड के बल्लेबाजों ने इस परिस्थिति में बेहतर बल्लेबाजी की। इस बीच, भारत को विराट कोहली की कप्तानी में अभी भी आईसीसी टूर्नामेंट जीतने का इंतजार है जो इस हार के साथ ही बढ़ गया है।

वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में भारत को मिली हार के 5 अहम वजहें!

वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में न्यूजीलैंड ने इतिहास रचते हुए भारत को हटा दिया। 144 साल के टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में न्यूजीलैंड ने सबसे बड़ा खिताब जीतकर इतिहास लिख दिया है। आइये जानते हैं टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में भारत को मिली हार के 5 अहम वजहें:

प्लेइंग इलेवन में गलती -

टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल में भारत को मिली हार की सबसे बड़ी गलत प्लेइंग इलेवन का



गलत चुनाव रहा। पूरे टेस्ट मैच में भारत को एक तेज गेंदबाज की कमी साफ खली। खासकर भुवनेश्वर कुमार जैसे स्क्रिंग गेंदबाज को टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल के लिए टीम में शामिल न करना भारतीय टीम के लिए सबसे बड़ी भूल साबित हुए। एक तरफ जहां न्यूजीलैंड की टीम जेमिसन, साउदी और तैगनर जैसे तेज गेंदबाज के साथ मैदान पर उतरी और भारतीय बल्लेबाजों को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया। भारत के खिलाफ ऐतिहासिक फाइनल में न्यूजीलैंड ने अपनी प्लेइंग इलेवन में एक भी स्पिनर को नहीं शामिल किया था।

भारतीय टॉप ऑर्डर का फलांप था -

ऐतिहासिक फाइनल में भारत के टॉप ऑर्डर फलांप रहे। विराट कोहली हीं या फिर रहाणे, सभी ने निराश किया। टोहित शर्मा को दोनों पारियों में अच्छी शुरुआत मिली लेकिन बड़ा स्कोर नहीं कर पाए। विराट कोहली ने पहली पारी में 44 रन बनाए लेकिन स्क्रिंग

खाती गेंदों पर वो भी विवश नजर आए। जेमिसन ने उन्हें दोनों पारियों में इन-स्क्रिंग और आउट-स्क्रिंग गेंद पर पवेलियन की राह दिखा दी। भारत के नई दिवार पुजारा टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में ढहते हुए नजर आए। दोनों पारियों में पुजारा फलांप रहे। यही नहीं दूसरी पारी में उन्होंने रॉस टेलर का कैच छिप में टपकाया भी। सही मायने में भारतीय बल्लेबाजी कीवी तेज गेंदबाजों के सामने बौनी नजर आई।

प्रैक्टिस मैच का न खेलना -

ऐतिहासिक टेस्ट मैच से पहले भारतीय टीम के खिलाड़ी एक भी प्रैक्टिस मैच नहीं खेले थे। जिसका खामियाजा यकीनन फाइनल में उन्हें भुगतना पड़ा। हालांकि भारतीय टीम के खिलाड़ियों ने आपस में इंद्रा-स्कवॉड मैच खेला था लेकिन उस अभ्यास मैच का भारतीय टीम को फाइनल में कोई फायदा नहीं मिला।

जसप्रीत बुमराह का बेअसर रहना -

वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप में जसप्रीत बुमराह

कीवी बल्लेबाजों के लिए बेअसर रहे। पहली पारी में बुमराह ने 26 ओवर की गेंदबाजी की लेकिन एक भी विकेट नहीं ले पाए तो वहीं दूसरे पारी में भी उनकी गेंदबाजी में वो बात नहीं दिखी, जिसपर न्यूजीलैंड बल्लेबाजों को ज्यादा मुश्किल हो। बुमराह का न चल पाना भी भारत की हार की एक मुख्य वजह रही।

न्यूजीलैंड के आखिरी 4 विकेटों ने बदल दिया मैच -

कीवी टीम की पहली पारी के दौरान आखिरी 4 टैंलेंडरों ने मिलकर 87 रन जोड़े। जिसके मैच में सारा फर्क पैदा कर दिया, एक तरफ जहां न्यूजीलैंड के 6 विकेट 162 रन पर गिर गए थे लेकिन इसके बाद आखिरी 4 बल्लेबाजों ने भारतीय रणनीति के उल्ट कमाल की बल्लेबाजी कर मैच का पासा वहीं पलट दिया था। न्यूजीलैंड ने पहली पारी में 249 रन बनाए थे और पहली पारी के आधार पर 32 रन की अहम बढ़त हासिल की थी। यह भी भारत की हार का एक अहम कारण रहा।

अब बिना नम्बर सेव किए भी व्हाट्सएप पर मैसेज भेजना हुआ आसान, जान लें पूरी प्रोसेस!



प्रियांशी श्रीवास्तव

आज के समय में व्हाट्सएप दुनिया का सबसे ज्यादा उपयोग करने वाला मैसेजिंग चैट ऐप बन गया है। देश ही नहीं बल्कि दुनिया में भी इसका इस्तेमाल बड़ी संख्या में किया जाता है। वहीं व्हाट्सएप भी लगातार अपने यूजर्स को सुविधा देने के लिए नए-नए फीचर्स लेकर आते ही रहता है। एक बार फिर से व्हाट्सएप ने एक नया फीचर लेकर आया है। इस फीचर की मदद से आप अपने मोबाइल में बिना किसी का नम्बर सेवा किए उसे व्हाट्सएप पर मैसेज भेज सकते हैं। अगर आप भी व्हाट्सएप के इस फीचर से अंजान हैं तो यहां पर हम आपको इसी फीचर के इस्तेमाल के बारे में बताने जा रहे हैं।

अब तक हम जब भी किसी को व्हाट्सएप मैसेज भेजते हैं तो ऐसे लोगों को ही मैसेज

भेज पाते हैं जिनका नम्बर हमारे मोबाइल में सेव होता है। अगर नम्बर सेव नहीं है तो पहले उसे सेव करना होता है उसके बाद ही आप किसी को मैसेज भेज पाते हैं। लेकिन व्हाट्सएप के इस फीचर का इस्तेमाल करके आप बिना नम्बर सेव किए भी किसी को मैसेज भेज सकते हैं। इस फीचर के बारे में शायद ही आप जानते हों। अगर आप भी इसका इस्तेमाल करना चाहते हैं तो इसके लिए नीचे दिए गए प्रोसेस को फॉलो करके कर सकते हैं।

इसके इस्तेमाल करने के लिए आपको सबसे पहले अपने मोबाइल या कम्प्यूटर सिस्टम पर वेब ब्राउजर खोलना होगा। अब आपको

<https://api.whatsapp.com/send?phone=xxxxxxxxxxxx> लिंक पर जाना होगा। ध्यान रहे कि इस लिंक में जहां एकसे लिखा है वहां पर कंट्री कोड के साथ फोन

नम्बर डालना होगा।

ये वह नम्बर होना चाहिए जिसे आप व्हाट्सएप मैसेज भेजना चाहते हैं, लेकिन नाम सेव नहीं करना चाहते हैं। जब आप इसमें नम्बर एंटर कर देते हैं तो आपको नीचे एक मैसेज दिखाई देगा। अब नीचे Message + 911234xxxxxx on WhatsApp लिखा होगा। इसके नीचे मैसेज लिखा होगा थेयर करने के लिए टैप करें। एक पॉप-अप भी आएगा। इस पॉप में आपको Open WhatsApp Desktop पर टैप करना होगा। आपके पास Looks like you don't have WhatsApp installed! Download or use WhatsApp Web लिखा मैसेज भी आ सकता है। इस स्थिति में आपको पहले WhatsApp डाउनलोड करना होगा या WhatsApp Web से एकसे करना होगा। इसके बाद आप बिना सेव हुए नम्बर पर भी मैसेज भेज सकते हैं।

अब 24 घंटे के अंदर बंद होंगे फेक अकाउंट, जानें सोशल मीडिया कंपनियों के नए नियम!

tumblr.



Search

tumblr

web



Fake Profile

अब सोशल मीडिया कंपनियों को शिकायत मिलने पर 24 घंटे के अंदर फेक अकाउंट को बंद करना होगा। भारत सरकार ने नए आईटी नियमों के तहत इसे अनिवार्य कर दिया है। ऐसे में फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब और डंस्टाग्राम पर फेमस पर्सनेलीज, मथरू बिजनेसमैन और आम आदमी के नकली प्रोफाइल पर लगाम लग सकेगी। केंद्र सरकार ने कहा कि सोशल मीडिया कंपनियों को शिकायत मिलने के तुरंत बाद एकरान लेना ही होगा।

अगर कोई अपने फॉलोअर बढ़ाने या मैसेज को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए किसी फिल्म अभिनेता, क्रिकेटर, राजनेता या अन्य किसी की फोटो का डस्टेमाल करता है। ऐसे में अगर संबंधित

शख्स को अपनी तस्वीर के डस्टेमाल पर आपत्ति है तो शिकायत कर सकता है। इस प्रावधानों को नए आईटी नियमों में शामिल किया गया है। अगर कोई व्यक्ति कंप्लेंट करता है तो सोशल मीडिया को कार्रवाई करनी होगी।

फर्जी अकाउंट की बेहद गंभीर समस्या -

सोशल मीडिया पर प्रभावशाली व्यक्तियों के फर्जी अकाउंट की बेहद गंभीर समस्या है। फेक अकाउंट बनाने के लिए कई कारण हो सकते हैं। ये प्योर-प्ले पैटोडी खाता, शरारत और फाइनेंशियल फ्रॉड करने के लिए बनाए गए अकाउंट हो सकते हैं। वहीं कुछ प्रथासकारों द्वारा भी बनाए जाते हैं। लोकप्रिय शख्स की इमेज को अपने प्रोफाइल पिकचर में डस्टेमाल करने डस्टेमाल कर फेक

प्रोफाइल करीबी होने का दावा करते हैं। वहीं कुछ लोग फोटो एडिटिंग कर अपनी तस्वीर जोड़ लेते हैं।

वेरिफाई करने का ऑप्शन देने का उल्लेख किया गया -

एक वेरिफाइड खाते के बारे में जानकारी सीमित है। कई लोगों को नहीं पता कि ब्लू टिक मतलब अकाउंट वेरिफाई है। नए आईटी नियमों में खातों को वेरिफाई करने का ऑप्शन देने का उल्लेख किया गया है। हालांकि इसे वॉलिटिंगरी प्रैक्टिस माना गया है। सरकार का आदेश उन प्लेटफॉर्मों के लिए अनिवार्य है जिनके पास 50 लाख से ज्यादा यूजर्स हैं।

करियर में ग्रोथ चाहिए तो इन टिप्प को ज़रूर अपनाएं!

दुनिया में शायद ही कोई होगा, जो अपना डिवेलपमेंट नहीं चाहता होगा। करियर के सफर में सही तरीके से हर मोड़ पर सही फैसला लेना बहुत ज़रूरी होता है। सही प्लानिंग, पॉजिटिव अप्रोच के साथ बढ़ने पर ही मंजिल को आसानी से हासिल किया जा सकता है। साल दर साल यह सफर जारी रहता है और तब जाकर आप करियर के उस पोजिशन पर पहुंच पाते हैं, जहां से पीछे देखने पर आपको सुखद अहसास होता है। इस दौरान आपको हर साल, हर पल ईमानदारी से यह आकलन करना होता है कि कहाँ कमी रह गई है। खुद से सच बोलना होता है। पिछले साल आपसे क्या कमी रह गई, आपसे बेहतर कोई और नहीं बता सकता है। ज़रूरी है कि आप उन कमियों को दूर करें और नए टेज़ॉल्लुशन के साथ सफलता की उड़ान भरें। यहां दिए जा रहे टिप्प निश्चित रूप से आपके करियर को निखारने में मददगार साबित हो सकते हैं।

कम्यूनिकेशन के तौर तरीकों को सीखना और अभ्यास में लाना -

जैसे-जैसे आपकी कंपनी अच्छा करने लगती है, वैसे-वैसे उसका विस्तार होता है। यह विस्तार ग्लोबल स्तर पर होता है। ऐसे में आपको नए सिरे से अपने कम्यूनिकेशन लेवल को बेहतर करना होता है। ऐसे में कई बार आपका आउटपृष्ठ इस बात पर निर्भर करता है कि आप सामने वाले से किस तरीके का कम्यूनिकेशन रखते हैं। आपको कई बार ई-मेल हैबिट्स को अडॉप्ट करना होता है और उन नई चीजों को अपने लाइफ स्टाइल का हिस्सा बनाना होता है, जो कम्यूनिकेशन का हिस्सा बन रही हैं। इसके अलावा फोन पर फ्रेक्टिव कम्यूनिकेशन करने के तरीकों को भी सीखना होता है। आपको लगता है कि आप अपने करियर और पर्सनेलिटी में यहां पर कमी महसूस कर रहे हैं, तो आप नए सिरे से अपने



कम्यूनिकेशन को बेहतर करने के लिए पहल कर सकते हैं।

सफल होने लगते हैं, तो यह आपके व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाता है।

नए स्किल से अपडेट करना -

आज के दौर में वर्कप्लेस पर नए स्किल्स की डिमांड बढ़ रही है। वर्किंग कल्चर में उन्हें ज्यादा अहमियत दी जाती है, जो अपने जॉब प्रोफाइल से हटकर स्किल डिवेलप करते हैं। ऐसे में नए साल के मौके पर आप नए कौशल के साथ कदम बढ़ा सकते हैं। इससे ऑफिस में आपकी निर्भरता तो बढ़ती ही है, साथ ही लोग आपकी तारीफ भी करते हैं। कई कंपनियां ऐसी हैं, जो अपने एम्प्लॉयर को स्किल को निखारने की सुविधा मुहैया करा रही हैं। आप निश्चित रूप से ऐसे अवसर का फायदा उठाएं।

टिप्प लेना सीखें -

कंपनियां जब बड़े इन्वेस्ट करती हैं, तो उन्हें ऐसे लोगों की तलाश होती है, जो उनके डियादों को सफल बनाएं। ऐसे में आपकी जिम्मेदारी बनती है कि आप आगे बढ़े और ज्यादा से ज्यादा काम करने की कोशिश करें। अगर आपके एम्प्लॉयर ऐसा प्लेटफॉर्म नहीं प्रोवाइड करते हैं, तो आपको खुद से इसके लिए पहल करना होगा। आप फ्रिलांसर हैं या फिर आपका अपना बिजनेस है, तो भी यह आदत फायदेमंद साबित हो सकती है। टिप्प लेकर जब आप

ऑफिस से बाहर, नेटवर्क करें स्ट्रॉन्ग -

वर्तमान में रेफरल कल्चर हायरिंग का हिस्सा बन गया है। कंपनियां रेफरल कैडिकेट्स को हायर करने में दिलचस्पी दिखाती हैं। इसके जरिए उन्हें कम मेहनत में उम्दा कैडिकेट्स मिल जाते हैं और उनका हायरिंग प्रॉसेस आसान हो जाता है। ऐसे में अगर आप अपने पूर्व सहयोगियों और दोस्तों के साथ टच में रहते हैं, तो इससे आपको जॉब में अच्छे अवसर मिलते हैं। वैसे भी ऑफिस से बाहर लोगों के साथ मिलना और उनके साथ क्वॉलिटी टाइम बिताना अच्छी आदत होती है। इसलिए नए साल में यह आपके लिए एक टेज़ॉल्लुशन हो सकता है।

टेक्नॉलजी में महारत हासिल करना -

वर्कफ्लैस पर प्रॉडक्टविटी को बढ़ाने के लिए कंपनियां स्मार्टफोन और नए ऐप यूज कर रही हैं। ऐसे में टेक्नॉलजी में होने वाले बदलावों के अनुसार खुद को अप टू डेर रखना ज़रूरी हो जाया है। अगर आप एक टेक्नो वर्कर हैं, तो आपके आस-पास हो रहे बदलावों पर नजर रखना और भी ज्यादा ज़रूरी है। आप टेक्नॉलजी में महारत हासिल करने के बाद ही अपने काम में बदलाव ला सकते हैं और तेजी से तरक्की कर सकते हैं।

धार्मिक नगरी वाराणसी के ऐतिहासिक घाट!

"बनारस इतिहास से भी पुराना है, परंपराओं से पुराना, मान्यताओं से भी पुराना, और इन सभी को एक साथ लगाने पर भी दो गुना पुराना" ऐसा अमेरिका के एक विख्यात लेखक 'मार्क टवेन' ने कहा था। इस अमेरिकन लेखक के शब्द वाराणसी के रहस्यमय इतिहास का जिक्र करते हैं। वाराणसी शब्द ही पवित्र है, युगो-युगो से धर्म का क्षेत्र है वाराणसी।

वाराणसी एशिया महाद्वीप का शिक्षा का केंद्र रहा है, जहां दूर-दूर से बुद्धिजीवी शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ, गंगा की पवित्रता को प्रणाम करने आते थे। तकरीबन 3000 वर्षों से वाराणसी अध्यात्म वाद, संस्कृत, योग, हिंदी भाषा के अभ्यास का क्षेत्र माना जाता है। सारनाथ जहां गौतम बुद्ध ने अपना पठला उपदेश दिया था, और इसी स्थल पर जैन धर्म के 23 वे तीर्थकर पटसवनंत का भी जन्म हुआ था। इसलिए वाराणसी सांस्कृतिक सह अस्तित्व का केंद्र रहा है। वाराणसी के घाट शिक्षा के संस्कृति का प्रतीक है। यहां लोगों को गंगा के कीरी बहुचारे हैं यह घाट, और सूर्य की पहली किरण से भेट करवाते हैं यह घाट। इन घाटों का इतिहास भी अनोखा है, और इनकी बनावट भी कुछ के लिए शायद यह बस एक नदी का किनारा हो, लेकिन

कितनों के लिए यह भगवान से मिलने का जरिया भी है।

अनोखे घाट और उनका इतिहास -

वाराणसी के घाट उसकी खूबसूरती में चार चांद लगाते हैं, गंगा मैया के किनारे स्थित यह घाट धनुष की आकृति में होने के कारण मनोहर लगाते हैं, सभी घाटों की पूर्वभिर्मिछ होने से सूर्योदय के समय घाट पर सूर्य की पहली किरण दस्तक देती है।

वाराणसी के घाट भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। पूर्वकाल में लोग शिक्षा ग्रहण करने आया करते थे वाराणसी। भगवान शंकर के पुजारियों के साथ-साथ, यहां अन्य धर्मों एवं अन्य संस्कृति भी विख्यात है। इतना विविध होकर भी, वाराणसी भारत का सांस्कृतिक प्रतीक वाद है।

वाराणसी के अधिकांश घाटों का पुनर्निर्माण 1720 ईसवी के बाद किया गया था। जब यह शहर मराठा साम्राज्य का हिस्सा था। वर्तमान घाटों के संरक्षक मराठा, सिंधिया, होलकर, भोसले और पेथवार्फ हैं। पूरे शहर में तकरीबन 88 घाट हैं, जिनमें से ज्यादातर पूजा एवं नहाने के लिए हैं और केवल दो दमशान स्थल हैं। कुछ घाट कई पौराणिक

कहानियों से जुड़े हैं, और कुछ घाट निजी संपत्ति हैं। घाटों के किनारे बनारस में नाव की सवारी करने के लिए भारी संख्या में यहां पर्यटक आते हैं। हर घाट की अपनी अलग अलग कहानी है। इन सभी घाटों में पांच घाट बहुत ही पवित्र माने जाते हैं। इन्हें सामूहिक ढंप से पंचतीर्थ कहा जाता है। ये हैं अस्ती घाट, दशाश्वमेध घाट, आदि केशव घाट, पंचगंगा घाट तथा मणिकर्णिका घाट। अस्ती घाट सबसे दक्षिण में अथवा आदि केशव घाट सबसे उत्तर में स्थित है।

1. दशाश्वमेध घाट

बनारस के सभी घाटों में से सबसे पुराना है, दशाश्वमेध घाट, झांसी की प्रसिद्ध गंगा आरती इसी जगह की जाती है। विश्वनाथ मंदिर के पास स्थित यह घाट अपनी खूबसूरती के लिए जाना जाता है। मान्यता है कि इस घाट का निर्माण स्वर्यं ब्रह्म देव ने किया था, शंकर भगवान कि स्वागत के लिए, दूसरी मान्यता यह भी है कि इसी स्थान पर ब्रह्मा दस घोड़ों की आहुति दी थी, दशाश्वमेध यज्ञ के लिए। घाट पर हर शाम को शिव के नाम की अग्नि पूजा होती है, जहां भगवान शिव, गंगा, सूर्य देव, अग्नि देव और पूरे ब्रह्मांड की पूजा होती है।



2. मणिकर्णिका घाट

यह घाट दाह संस्कार के लिए जाना जाता है। मान्यता है कि शिव को वाराणसी से जाने से रोकने के लिए माता पार्वती ने अपने कान की बाली इसी घाट पर छुपा दी थी, और भगवान शिव को से हूँडने के लिए कहा था। जिसके कारण शिव उसे कभी हूँड नहीं पाए और उनका निवास इसी घाट पर होता है, कहा जाता है जबीं भी कोई आत्मा इस घाट पर आती है, तो भगवान शिव उनसे पार्वती के बाली के बाटे में अवश्य पूछते हैं। इस घाट पर ही स्थित है रत्नेश्वर महादेव मंदिर। कुछ



लोगों का यह भी मानना है कि इस घाट का नाम झांसी की टानी के नाम मनीकरणिका पर रखा गया है।

3. अस्सी घाट

यह घाट अस्सी और गंगा नदी के मिलाप पर स्थित है जो कि दूर दक्षिण पर है। यहां एक शिवलिंग है जो एक पीपल वृक्ष के नीचे है। अस्सी घाट के किनारे स्थित है अस्सीसंगमेश्वर मंदिर, अस्सी घाट का निक्र पहली बार काशी खंड के स्कंद महापुराण में मिलता है। यह घाट लोगों के बीच अत्यंत लोकप्रिय है। इस घाट पर शिवरात्रि के दौरान अत्यंत भीड़ होती है। एक मान्यता के अनुसार देवी दुर्गा ने शुभ और निशुभ नामक राक्षसों का वध करने के बाद उनकी तलवार को यहां फेंका था। उन्होंने अपने तलवार को फेंका था उस नदी को ही अस्सी नदी के नाम से जानते हैं।

4. आदिकेशव घाट

इस घाट के किनारे स्थित है, भगवान विष्णु का आदिकेशव मंदिर। कहा जाता है कि

ज्यारहवीं सदी में गढ़वाल वंश के राजाओं ने आदिकेशव विष्णु मंदिर एवं घाट का निर्माण करवाया था। मान्यता है कि ब्रह्म लोक निवासी देवदास के शर्त के अनुसार ब्रह्माजी ने वाराणसी की राजगद्दी उन्हें सौंप दी थी। और देवताओं को वाराणसी छोड़ना पड़ा, शंकर भगवान तब विचलित हो उठे और विष्णु जी के पास के गये तब विष्णु जी लक्ष्मी माता के साथ गंगा और वरुणा के संगम के तट के किनारे आए, इसलिए इस जगह को विष्णु पादोदक के नाम से भी जाना जाता है, और ब्रह्मा लोक जाकर शिव को उनकी नगरी उन्हें वापस दिलाई। इसलिए अत्यंत लोकप्रिय है आदि केशव घाट। इस घाट को राजघाट नाम से भी जाना जाता है।

5. पंचगंगा घाट

यह घाट उस जगह पर स्थित है, जहां पांच नदियां गंगा, यमुना, सरस्वती, किराना और दूध पाप का मिलाप है, इन पांचों नदियों में केवल गंगा को देखा जा सकता है। पंचगंगा घाट पर पांच नदियों की मूर्तियां भी हैं। मान्यता है कि संत कबीर के गुरु वेदांत रामानंद यहां पर शिक्षा दिया करते थे, आज संत तुलसीदास ने विनय पत्रिका इसी घाट पर लिखी थी। इसी जगह पर औरंगजेब ने आलमगीर मस्जिद भी बनवाया था, इस घाट को बेनी माधव का डेंगा भी कहा जाता है। यहां पर पहले बिंदुमाधव मंदिर हुआ करता था, जिसका विधंस करके औरंगजेब ने यहां मस्जिद का निर्माण किया था।

इसके अलावा वाराणसी में और भी लोकप्रिय घाट है जैसे कि दरभंगा घाट, ललिता घाट, दत्तत्रेय घाट, भोसले घाट, मनमंदिर घाट, हरिशंद्र घाट इत्यादि। वाराणसी के महानिवण घाट में स्वयं महात्मा बृहद ने स्नान किया था। इसलिए बृहद धर्म में भी बहुत महत्वपूर्ण है वाराणसी का यह मनमोहक घाट।

श्रद्धालुओं को इन घाटों का दौरा करने एवं उनकी सुंदरता अनुभव करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। श्रद्धालु इस घाट पर आत्मा की खोज, या आध्यात्मिकता की खोज, खुद की खोज, और अपने अस्तित्व की खोज में दूर-दूर से आते रहे हैं। बनारस के यह घाट हर किसी के लिए अपने अलग अलग मायने रखते हैं। और हर किसी के उम्मीद के प्रतीक है यह घाट।

घाट प्रदूषण -

आज के समय में प्रदूषण हर जगह है, और गंगा नदी भी इससे प्रदूषित हो रही है। नदी में औद्योगिक कूड़ा जाने के कारण, प्रदूषण का स्तर बढ़ रहा है और इससे घाट भी प्रभावित हो रहे हैं। कहा जाता है कि गंगा नदी में ऐसा तत्व है जो कई बीमारियों को ठीक कर सकता है। इसलिए भारतीय आयुर्वेद में गंगा एक महत्वपूर्ण तत्व है। लेकिन यदि लोग खुद नदी को ही बीमार कर देंगे, तो फिर क्या हम गंगा को मां कहने का दर्जा नहीं खो रहे। श्रद्धालु यहां नहाने तो आते हैं साथ-साथ अपने साबुन थैंपू का केमिकल नदी में छोड़ जाते हैं। इतना ही नहीं, कई लोग इसमें अपना कचरा भी डाल जाते हैं। अगर ऐसा ही चलता रहा तो एक दिन नदी अपने आप सूख जाएगी और लोगों को पानी तक पीने को नहीं मिलेगा। इसलिए सभी से अनुरोध है, कि यदि आप गंगा को अपनी मां कहते हैं, तो अपने मां के प्रति उसका आदर और सम्मान भी करें। गंगा को प्रदूषण मुक्त करने में योगदान दे तभी गंगा अपना फल भी सभी को दे पाएगी।

गंगा नदी खूबसूरती की परिभाषा है और गंगा के घाट उस खूबसूरती का गवाह।

**"गंगा माता है, गंगा जननी है,
हर घाट पर उसका वास है।
हर मुख पर उसका नाम है।
वह सबके रोग हरती है।
बस सब की रक्षक देवी है"**

मेष- इस माह में आपको अपने स्वास्थ्य को लेकर थोड़ा ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता हैं क्योंकि इस माह आपको कोई ना कोई बीमारी घेरे रहेंगी जिस कारण मानसिक संतुलन भी ठीक नहीं रहेगा। माह की शुरुआत में जहाँ गले से संबंधित समस्या परेशान कर सकती हैं तो वही दूसरे सप्ताह में पेट से संबंधित समस्या होंगी।

वृषभ- इस माह में आपको थोड़ा ज्यादा परिश्रम करने की आवश्यकता है अन्यथा परिणाम आपके अनुकूल नहीं मिल पाएंगे। इस माह आपको व्यापारिक रूप से कुछ अद्भुत निष्ठा लेने पड़े सकते हैं जो भविष्य के लिए लाभदायक मिछ्ठ होंगे। जॉब कर रहे लोगों को कुछ अद्वितीय आ सकती हैं लेकिन आप धीरज से काम लेंगे तो बिंदु हुए काम भी बन सकते हैं।

मिथुन- इस माह धन संबंधी बड़ा लाभ मिलने की संभावना है। कोई भी व्यापारिक निष्ठा अपने परिवार के सदस्यों की सहमति के बाद ही ले। यदि शेयर बाजार में पैसा लगा रखा है तो वहाँ से आकस्मिक धन लाभ होगा। नौकरी में भी सभी आपके काम से खुश दिखाई देंगे तथा आपके काम को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

कर्क- आपके लिए जुलाई के माह में शुभ संकेत हैं। इस माह थगि देव आप पर प्रसन्न रहेंगे जिस कारण स्वास्थ्य भी बेहतर रहेगा। परिवार के सदस्यों के साथ आपका मेलझोल बढ़ेगा तो वही मित्रों के साथ भाईचारा और ज्यादा मजबूत होगा। अपने किसी मित्र के द्वारा शादी का निमंत्रण भी मिल सकता है। प्रेम जीवन में आपका अपने साथी के साथ संबंध पहले की तुलना में थोड़ा मन-मुठाव वाला रहेगा लेकिन आपसी सूझ-बूझ से यह समस्या भी हल हो सकती है।

सिंह- इस समय आपको अपने परिवार के सदस्यों का विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है खासकर आपकी माता के स्वास्थ्य का। आपकी माता का स्वास्थ्य थोड़ा खराब रह सकता है इसलिये उनके खानपान पर विशेष ध्यान दो। इस माह आपकी कुंडली पर चन्द्रमा की स्थिति अच्छी नहीं है जिस कारण माँ का स्वास्थ्य ढीला रहेगा।

कन्या- आपके लिए जुलाई माह मिले जुले परिणाम लेकर आएगा। धन संबंधी लाभ मिलने की संभावना हैं तो वही कोई गलत निष्ठा बड़ा धारा भी करवा सकता है। इसलिये कोई भी निष्ठा अपने परिवार के सदस्यों के साथ विचार-विमर्श करके लेंगे तो ज्यादा बेहतर परिणाम मिलेंगे। पड़ोस में कोई आपसे द्वेष भावना रख सकता है।

तुला- आपको जुलाई माह में अपने करियर पर फोकस करने की आवश्यकता है। जो लोग किसी जॉब की तलाश में हैं या नई जॉब लगी है तो मन लगाकर काम करें। छात्रों को अच्छे परिणाम पाने के लिए इस माह ज्यादा परिश्रम करने की आवश्यकता है तभी उन्हें सफलता मिलेगी। व्यापारी इस माह लाभ में रहेंगे।

वृश्चिक- आपके लिए जुलाई माह थोड़ा भारी रहेगा क्योंकि शनि का प्रभाव इस महीने ज्यादा है। धन संबंधी कोई भी निष्ठा अपनों से बड़ों के परामर्श अनुसार ही करे व छोटों के प्रति अपने व्यवहार को उत्तेजित रखें। धर में किसी पुरानी बात को लेकर विवाद की स्थिति उत्पन्न होगी लेकिन संयम से काम लेने से वह बढ़ नहीं पाएगी। इस माह आपका स्वास्थ्य भी खराब रहने की संभावना है जिस कारण शारीरिक रूप से अस्वस्थ व कमजोर महसूस करेंगे।

धनु- इस माह आपका अपने घरवालों के साथ लगाव और अधिक बढ़ेगा व प्रेम जीवन में भी मधुरता आएगी। यदि आप किसी से प्रेम करते हैं और उनसे कह नहीं पा रहे हैं तो इस माह उनसे कह दे, परिणाम सकारात्मक रहेंगे लेकिन उत्तेजित होने से बचे। धर के किसी सदस्य के द्वारा भी आपकी इसमें सहायता की जाएगी। व्यापारिक रूप से घाटा होने की संभावना।

मकर- इस माह धन संबंधी बड़ा लाभ मिलने की संभावना हैं क्योंकि लक्ष्मी माता आपसे प्रसन्न है। जॉब कर रहे लोगों को इस माह नयी जॉब के ऑफर मिल सकते हैं जो भविष्य की दृष्टि से लाभदायक मिछ्ठ होंगे। सहकर्मी भी आपके काम से खुश होंगे व आपकी पदोन्नति भी हो सकती है। व्यापार में नए ग्राहक जुड़ेंगे।

कुंभ- इस माह आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर होगी व व्यापार में नए समझौते भी हो सकते हैं। विद्यार्थियों के लिए यह माह शुभ रहेगा तथा मनचाहे परिणाम मिलेंगे। किसी नए प्रोजेक्ट पर काम करने को मिलेगा। हालाँकि उस पर मेहनत ज्यादा करनी होगी लेकिन यह आगे चलकर बहुत काम आएगा जो आपके भविष्य को उज्ज्वल बनाने का काम करेगा।

मीन- इस माह आपको अपने करियर को लेकर सजग होने की आवश्यकता है। आपके पास कई नए ऑफर आ सकते हैं लेकिन ध्यान ना देने के कारण वह आपके हाथ से निकल जाएंगे। इसलिये आपको अपने भविष्य के लिए ज्यादा सजग होना पड़ेगा अन्यथा बाद में पछतावा होगा। आपका अपने साथी के साथ कुछ चीज़ों को लेकर मतभेद हो सकता है। स्वास्थ्य के अनुसार यह माह आपके लिए अच्छा बीतेगा तथा किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं होगी।

कोरोना से ठीक हुए मरीजों को कार्डियो पल्जोनरी रिहैबिलिटेशन की सलाह



कोरोना से ठीक हुए मरीजों में लम्बे समय तक सांस फूलना, थकान, जोड़ों एवं मांसपेशियों में दर्द, सीने में दर्द, कमजोर पाचन तंत्र, आलस्य जैसी आदि समस्याएं बनी रहती हैं। ऐसे में बीएचयू विज्ञान संस्थान स्थित आर्थोपेडिक्स डिपार्टमेंट फिजियोथेरेपी असिस्टेंट प्रोफेसर डा. एसएस पांडेय ऐसे मरीजों को इन समस्याओं से निजात पाने के लिए कार्डियो पल्जोनरी रिहैबिलिटेशन की सलाह देते हैं। इस विधि में फिजियोथेरेपिस्ट मरीज का स्वास्थ्य संबंधी जानकारी लेकर उनकी समस्याओं के अनुसार व्यायाम करने की सलाह देते हैं। साथ ही समय-समय पर मरीज की स्थिति का प्रशिक्षण भी करते रहते हैं। प्रोफेसर पांडे आगे बताते हैं कि कोरोना के मरीज ठीक होते ही तुरंत ज्यादा मेहनत या वर्कआउट न करने लगे बल्कि पहले अपने डॉक्टर और फिजियोथेरेपिस्ट से सलाह लें और उनके दिशा निर्देश के अनुसार अपना शारीरिक कार्य करें। वहाँ असिस्टेंट प्रोफेसर को डॉ एसएस पांडे ने बताया की सोशल मीडिया या अन्य माध्यमों से व्यायाम का पता लगा के व्यायाम करना गलत है। हर व्यायाम हर व्यक्ति के लिए सही नहीं होता ऐसे में अपने फिजियोथेरेपिस्ट से जानकारी लेकर ही व्यायाम करें। ऐसान करने से शरीर पर बुरा असर पड़ता है।

बीमारी से तंग आकर हिस्ट्रीथीटर ने की आत्महत्या, पोस्टमार्टम के लिए भेजा थाब

वाराणसी के रोहनिया थाना के नरउर गांव के एक व्यक्ति ने खुद को गोली मार कर आत्महत्या कर ली। आत्महत्या करने वाले व्यक्ति का नाम कृष्ण कुमार सिंह उर्फ पप्पू है। बता दें कि पप्पू सिंह पूर्व में रोहनिया थाने का टॉप टेन अपराधी और हिस्ट्रीथीटर रहा है। बताते चले कि पप्पू सिंह विगत 5 वर्षों से दुर्घटना में दोनों पैरों से विकलांग हो चुका था और पिछले दो महीने से लिवर खराब हो गया था। बीएचयू से इलाज करवा रहा पप्पू सिंह अपनी बीमारी से काफी परेशान था। घर वालों के अनुसार पप्पू सिंह की आत्महत्या की वजह उनकी बीमारी को ही बताया जा रहा है। आत्महत्या की सूचना के बाद मौके पर पहुंचे एसपी चाढ़ द्विवेदी के द्वारा मिली जानकारी के अनुसार उसके पास 315 बोर का तमंचा था। पुलिस द्वारा थाब को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया।

स्टांप मंत्री रविंद्र जायसवाल के खिलाफ अधिवक्ताओं में दिखा आक्रोश,

वाराणसी में स्टांप मंत्री रविंद्र जायसवाल के खिलाफ अधिवक्ताओं में आक्रोश देखने को मिल रहा है। पश्चिमी यूपी में स्टांप मंत्री रविंद्र जायसवाल के द्वारा रजिस्ट्री ऑफिस में अधिवक्ताओं की आवश्यकता न होने के बयान से नाराज़ अधिवक्ताओं ने रविंद्र जायसवाल के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। वहाँ दूसरी तरफ रविंद्र जायसवाल ने भी अपने इस बयान पर सफाई दी है। स्टांप मंत्री के इस बयान का विरोध करने वाले अधिवक्ताओं के ऊपर हुए मुकदमों से नाराज़ 'द बनारस बार और सेंट्रल बार' के अधिवक्ताओं ने प्रशासन और रविंद्र जायसवाल के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। साथ उन्होंने अधिवक्ताओं के ऊपर हुए मुकदमों को निरस्त करने की भी मांग की। इस पूरे मामले पर उत्तर प्रदेश स्टांप मंत्री ने सफाई देते हुए कहा कि उनके बयान को गलत तरीके से पेश किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह नियम पहले से है कि कोई भी व्यक्ति यदि रजिस्ट्री करा रहा है तो वह खुद भी करा सकता है, उसमें अधिवक्ता की ज़रूरत नहीं होती है। यदि रजिस्ट्री कराने वाला व्यक्ति अधिवक्ता लेकर आता है तो अधिवक्ता को रजिस्ट्री ऑफिस में नहीं रोका जाएगा।

भाजपा नेता के बर्थडे पार्टी से फरार हुआ वांटेड अपराधी, तलाश जारी

एक तरफ जहां भाजपा नेता चुनाव की तैयारियों जुटे हुए हैं, वहाँ अपराधियों के पैरवा पर अथवा अपराधियों के साथ नाम आने पर सख्त लहजे में समझाया भी जा रहा है। वहाँ दूसरी तरफ कानपुर के थाना नौबर्सा थेनेर उस्मानपुर आकर्षण गेस्ट हाउस भाजपा नेता नारायण भदौरिया के जन्मदिन पार्टी में एक वांटेड अपराधी के शामिल होने से भाजपा नेता का नाम उस अपराधी के साथ जोड़ा जा रहा है। इस घटनाक्रम से पार्टी की छवि भी धूमिल हो रही है। बता दें कि भाजपा नेता नारायण भदौरिया की जन्मदिन पार्टी में कुछ्यात अपराधी मनोज सिंह के होने की सूचना पर उसे गिरफ्तार करने पुलिस पहुंच गई। पुलिस को मनोज सिंह मिल भी गया और उसे गिरफ्तार कर जीप में बैठा भी लिया गया। लेकिन पार्टी में ही मौजूद 10-15 व्यक्तियों ने जबरन पुलिस से धक्का-मुक्की करके जीप से मनोज सिंह को बाहर खींच लिया और फरार करा दिया। सूत्रों के अनुसार मौके पर मौजूद अन्य अपराधिक छवि के कुछ लोगों ने ऐसी हटकत नेता जी के सामने ही की। अब देखने वाली बात ये है कि वाली भाजपा इस प्रकरण में क्या सख्त और कानूनी कदम उठाएगी, यह तो बत्त ही बताएगा। बता दें कि पुलिस कमिश्नरेट के अपर पुलिस उपायुक्त दक्षिणी ने अपने बयान में कहीं भी भाजपा नेता का नाम अथवा उनकी बर्थडे पार्टी का जिक्र नहीं किया है।

अयोध्या राम मंदिर के मास्टर प्लान को लेकर हाई लेवल की मीटिंग, पीएम के साथ कई बड़े नाम बैठक में शामिल

अयोध्या के मास्टर प्लान को लेकर आदित्यनाथ, दोनों उप मुख्यमंत्री मीटिंग हुई। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के सरकार के अयोध्या विजन का डिजिटल मॉडल के साथ अयोध्या के समक्ष रखा गया। इस संबंध में पीएम सुझाव मांगे। साथ ही साथ अयोध्या के गई मीटिंग में अयोध्या के विकास में



विच, नगर विकास, परिवहन, पर्यटन व नागरिक उद्ययन विभाग के मंत्री भी मौजूद थे। डिप्टी सीएम के शब्द प्रसाद मौर्य ने कहा कि पीएम मोदी ने बैठक में मार्गदर्शन दिया। अयोध्या में बनने वाले भव्य राम मंदिर के साथ-साथ विकास कार्यों को लेकर चर्चा हुई। उन्होंने कहा कि विकास कार्यों को लेकर पीएम ने व्यापक विजन दिया। वहीं राम मंदिर के प्रधान पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास ने अयोध्या के मास्टर प्लान पर पीएम मोदी और यूपी के सीएम योगी की मीटिंग पर खुशी व्यक्त की। बैठक में पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास ने कहा कि जब तक उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री इससे नहीं जुड़ेंगे, तब तक विकास कार्य धरातल पर नहीं दिखेंगे।

बीएचयू के छात्र ने किया अंजीबों गटीब कार्य, घर की दीवार पर लिखा- 'यह मकान बिकाऊ है, हिंदू धर्म नहीं छोड़ूंगा'

उत्तर प्रदेश के चंदौली जिले बभनियांव गांव से एक सनसनीखेज मामला सामना आया। गांव के एक निवासी बीएचयू के विधि छात्र द्वारा अपने ही घर की दीवार पर- 'यह मकान बिकाऊ है, हिंदू धर्म नहीं छोड़ूंगा' का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। दरअसल छात्र का आरोप है कि वह अपने पड़ोसियों से परेशान हो चुका है। जल्द ही समाधान नहीं हुआ तो वह मकान बेच कर गांव से चला जाएगा। धानापुर थाना क्षेत्र के बभनियांव गांव निवासी छात्र हरिनारायण दुबे का आरोप है कि पड़ोसियों ने इस कदर परेशान कर रखा है कि उसके पास गांव



बीएचयू में लगेगा नया ऑक्सीजन प्लांट, ऑक्सीजन उत्पादन की बढ़ेगी संख्या

एक तरफ जहां कोरोना के मामले कम हो रहे हैं वहीं दूसरी तरफ कोरोना की तीसरी लहर की भी संभावना बनी हुई है। तीसरी लहर के आने से पहले ही पूर्वांचल का सबसे बड़ा स्वस्थ संस्थान माना जाने वाले बीएचयू इसके तैयारियों में जुट गया है। इसी क्रम में बीएचयू के सर सुंदरलाल अस्पताल में ऑक्सीजन की क्षमता बढ़ाई जा रही है। बीएचयू अस्पताल के

चिकित्सा अधीक्षक डॉ के के गुप्ता से मिली जानकारी के अनुसार पीएम के यह फंड से अस्पताल में 1 हजार एलपीएम का पीएसए ऑक्सीजन प्लांट लगाया जा रहा है। इस प्लांट के लिए डीआरडीओ द्वारा मरीन उपलब्ध कराई जा रही है। बता दें कि पीएसए ऑक्सीजन प्लांट वातावरण के हवा को प्लॉइफाई करके ऑक्सीजन का निर्माण करेगा, इसकी प्लॉइटी 98 फीसदी होगी। 1 मिनट में इस प्लांट से 1 हजार लीटर ऑक्सीजन का उत्पादन हो सकेगा। इससे अस्पताल के 100 बेडों को ऑक्सीजन उपलब्ध कराया जा सकेगा। इससे पहले से अस्पताल में 30 हजार लीटर का ऑक्सीजन प्लांट संचालित किया जा रहा है पर अब इसकी क्षमता को बढ़ा कर 50 हजार लीटर करने की तैयारी है। डीआरडीओ नेशनल हाईवे ऑफ इंडिया के इंजीनियर द्वारा प्लांट को लगाने का काम किया जा रहा है। प्लांट लगाने के लिए उन्हें जमीन उपलब्ध करा दी गई है। इसको लेकर अस्पताल प्रशासन लाइसेंस और अन्य कागजी कोरम को पूछा करने में जुटी हैं।



बीएचयू छात्र ने कहा कि वर्गविशेष के पड़ोसियों ने उसे परेशान कर रखा है। वो कभी जमीन पर कब्जा कर लेते हैं तो कभी किसी काम में अवरोध उत्पन्न कर देते हैं। ज़रा सी बात पर विवाद कर फर्जी मुकदमे में फ़साने की धमकी देते हैं।

वाराणसी के घाटों पर लगाए जा रहे हेरिटेज साइनेज, पर्यटकों का होगा मार्गदर्शन



वाराणसी को स्मार्ट सिटी में तब्दील करने के लिए सरकार द्वारा कई नए फैसले लिए जा रहे हैं। इसी क्रम में लॉकडाउन के दौरान वाराणसी के 84 घाटों पर हेरिटेज साइनेज लगाने का काम शुरू कर दिया गया है। इन साइनेज बोर्ड पर घाट की महत्व के साथ उसके आस-पास की प्रमुख धरोहरों और खासियत के बारे में विस्तार से दर्शाया जाएगा। कमिश्नर दीपक अग्रवाल से मिली जानकारी के अनुसार हेरिटेज साइनेज को विशेष प्रकार के धातु कर्टन पर बनाया जाएगा। बता दें कि इस धातु से बनाने के कारण यदि गंगा में पानी का स्तर बढ़ता भी है तो हेरिटेज साइनेज खराब नहीं होगा। इतना ही नहीं बल्कि साइनेज में क्यूआर कोड भी होगा, जिसे मोबाइल के माध्यम से रैकेन करने पर स्मार्ट सिटी के पोर्टल द्वारा उस हेरिटेज साइनेज के धरोहर से संबंधित जानकारी प्राप्त होगी। इस साइनेज को दिव्यांगों और दृष्टिहीनों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बनाया जा रहा है। कमिश्नर दीपक अग्रवाल के निर्देश के अंतर्गत शहर के 84 घाटों पर बनाये जा रहे हेरिटेज साइनेज से पर्यटकों के मार्गदर्शन व अन्य ऐतिहासिक स्थलों से संबंधित जानकारी मूहैया कराया जा सकेगा।

वाराणसी के खिड़कियां घाट पर बन रहा देश का पहला सीएनजी स्टेशन

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी में सीएनजी स्टेशन बनाया जा रहा है। यह स्टेशन वाराणसी के खिड़कियां घाट पर बनाया जा रहा है। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के निर्देश पर बन रहे इस सीएनजी स्टेशन से बनारस के घाटों को मोटर बोट से छुटकारा मिलेगा।



वाराणसी के सभी नावों को सीएनजी नावों में तब्दील किया जा रहा है। वाराणसी मंडलायुक्त दीपक अग्रवाल के अनुसार यह देश का पहला इकोफ्रेंडली स्टेशन होगा। सीएनजी स्टेशन बनाने के बाद वाराणसी की सभी सीएनजी नाव खिड़कियां घाट से सीएनजी भरवा पाएंगी। सभी नाव खिड़कियां घाट से चल कर वाराणसी के सभी घाटों पर पर्यटकों को पर्यटन का लाभ देंगी। वाराणसी के मंडलायुक्त से मिली जानकारी के अनुसार करीब 100 नावों को सीएनजी में कन्वर्ट कर दिया जा चुका है वहीं बाकी नावों को कन्वर्ट करने का काम अभी जारी है। वाराणसी में सीएनजी स्टेशन के बनाने से पर्यावरण को भी फायदा होगा।

न्यूज बकेट के खबर का हुआ असर, महिला को मिली मदद



वाराणसी के रोहनिया विधानसभा क्षेत्र के नैपुराकला गांव में न्यूज बकेट के खबर का हुआ असर, महिला को मिली मदद। गौरतलब है कि न्यूज बकेट की टीम लगातार गांव में घूम कर ग्राउंड जीरो से रिपोर्ट कर रही है। गांव की बदहाल अवस्था की जमीनी हकीकत दिखा रही है। रिपोर्ट करते वक्त हमारी टीम की मुलाकात एक ऐसी महिला से हुई जिसके पति का देहांत हो चुका है। महिला के परिवार में दो बेटे एक बेटी हैं। बड़े बेटे जिसकी उम्र 18 वर्ष है मानसिक ढंप से अस्वस्थ एवं अचेत अवस्था में है। बेटे के इलाज व देखभाल का जिम्मा माँ के कंधे पर है। बेटी 10वीं तक की पढ़ाई करने के बाद आगे की पढ़ाई पूरी न कर पाने के चलते घट बैठने को मजबूर है। महिला के पास कोई रोजगार नहीं है, रहने को छत नहीं है, खाने को अनाज नहीं है। जब यह खबर हमारी टीम ने दिखाई तो इसका असर यह हुआ कि पास के ही एक खली के दुकानदार बूजेश यादव ने मदद के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। महिला को ₹5000 की धनराशी मदद के तौर पर दी। इससे महिला को परिवार का खर्च चलाने एवं इलाज में काफी मदद मिली है।

ऑक्सीजन की कमी के सवाल पर भाजपा का दिल्ली सरकार पर हमला

कोरोना की दूसरी लहर के दौरान दिल्ली में ऑक्सीजन संकट को लेकर सुप्रीम कोर्ट की ऑडिट पैनल की रिपोर्ट पर अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी और भारतीय जनता पार्टी आमने-आमने आ गईं दिल्ली में ज़रूरत से चार गुना अधिक ऑक्सीजन मांगे जाने की बात सामने आने के बाद भाजपा ने केजरीवाल सरकार पर हमला बोला है, वहाँ आम आदमी पार्टी ने कहा है कि ऐसी कोई रिपोर्ट ही नहीं आई है। जानकारी के मुताबिक, ऑडिट पैनल ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि कोरोना की दूसरी लहर के दौरान दिल्ली सरकार ने ज़रूरत से 4 गुना अधिक ऑक्सीजन की मांग की थी। दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि एक तथाकथित रिपोर्ट में बताई जा रही है कि दिल्ली में जब कोरोना का पीक था तो ऑक्सीजन की कमी नहीं थी और ऑक्सीजन की मांग 4 गुना बढ़ा-चढ़ाकर बताई गई थी। भाजपा के नेता जिस तथाकथित रिपोर्ट के हवाले से अरविंद केजरीवाल को गाली दे रहे हैं, ऐसी कोई रिपोर्ट नहीं है। उन्होंने आगे कहा कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित ऑक्सीजन ऑडिट कमेटी ने अभी तक किसी भी रिपोर्ट को मंजूरी नहीं दी है। हमने ऑडिट कमेटी के कई सदस्यों से बात की, सबका कहना है कि उन्होंने किसी रिपोर्ट पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं। मैं भाजपा नेताओं को चुनौती देता हूं कि वो रिपोर्ट लेकर आये जिसे ऑक्सीजन ऑडिट कमेटी के सदस्यों ने मंजूरी दी हो।

कृष्णमीट में आर्टिकल 370 की बहाली को लेकर उमर अब्दुल्ला का बड़ा बयान

जम्मू-कश्मीर में जाने के बाद पहली बार और कृष्णमीटी नेताओं के बैठक के बाद नेशनल अब्दुल्ला ने कहा कि बहाली की मांग को छोड़ा करना कि मौजूदा करेगी, यह मुख्यता होगी। परिसीमन और चुनाव माह कृष्णमीट के 14 नेता सर्वदलीय बैठक में इस बैठक में कई वरिष्ठ



के बाद सभी नेताओं ने अपनी-अपनी प्रतिक्रिया दी। इसी क्रम में नेशनल कांग्रेस के नेता उमर अब्दुल्ला ने भी मीडिया के सामने अपनी बात रखी। पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा है कि उन्होंने अनुच्छेद 370 की बहाली की मांग को छोड़ा नहीं है। हालांकि साथ ही उन्होंने कहा है कि इस बात के कोई संकेत नहीं हैं कि मौजूदा सरकार इसे बहाल करेगी। अब्दुल्ला ने इस मीटिंग को 'संघर्ष की थुकआउट' बताया है।

'मां तुझे सलाम' गाने की वजह से बंद हुआ मिनिस्टर रविशंकर प्रसाद का द्विटर अकाउंट

नए आईटी नियमों को लेकर भारत सरकार के साथ अपने बिंगड़ते दिनों के बीच द्विटर ने अमेरिकी कॉपीराइट कानून (डीएमसीए) के कथित उल्लंघन को लेकर सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री रविशंकर प्रसाद के अकाउंट को कटीब एक घंटे तक बंद कर दिया। हालांकि, ऐसा क्यों हुआ, इसकी असली वजह अब सामने आ गई है।



म्यूजिक डायरेक्टर ए आर रहमान का गाना 'मां तुझे सलाम' और सोनी म्यूजिक की वजह से रविशंकर प्रसाद का द्विटर अकाउंट कुछ समय के लिए लॉक कर दिया गया। किसी केंद्रीय मंत्री के खाते पर इस तरह से रोक लगाने का यह पहला मामला है। डीएमसीए नोटिस की मानें तो द्विटर ने रविशंकर प्रसाद के जिस द्वीप पर एकान्त लिया है, वह द्वीप 2017 का है। लुमेन डेटाबेस दस्तावेज के मुताबिक, डीएमसीए संबंधी नोटिस 24 मई, 2021 को भेजा गया और द्विटर को 25 जून, 2021 को मिला। लुमेन डेटाबेस एक स्वतंत्र अनुसंधान परियोजना है, जिसके तहत द्विटर द्वारा अपनी साइट पर रोक लगायी जानी वाली सामग्री सहित अन्य का अध्ययन किया जाता है।

आर्टिकल 370 को हटाए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बीच बैठक हुई। इस कॉन्फ्रेंस के चीफ उमर अब्दुल्ला ने आर्टिकल 370 की नहीं है, मगर यह उम्रीद सरकार इसे बहाल बता दें कि कृष्णमीट में प्रक्रिया को लेकर बीते पीछे मोदी के साथ थामिल थे। लंबी चली नेता थामिल हुए। बैठक

चीन ने अमेरिकी सेंटर से डिलीट करवाया कोरोना का थुकआती डाटा



चीन से निकल कर दुनिया भर में पिछले डेढ़ साल से तबाही मचा रहे कोरोना वायरस की उत्पत्ति को लेकर अभी भी

बहस छिड़ी हुई है। चीन पर कोरोना वायरस से जुड़े तथ्य छुपाने के आरोप लगते आए हैं। ये आरोप अब यकीन में बदलते नजर आ रहे हैं। हाल ही में एक रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि चीन ने बड़ी ही चालाकी से अपने यांग के थुकआती कोरोना मरीजों के नमूनों की जांच और वायरस की जेनेटिक सीक्रिप्शन से जुड़े आंकड़ों को अमेरिकी डाटा बेस से डिलीट करवा दिया। चीन के अमेरिकी डेटाबेस से डाटा डिलीट कराने से कोरोना वायरस की उत्पत्ति का पता लगाना और भी ज्यादा मुश्किल हो गया है। अमेरिका के सिएटल में फ्रेड हचिंसन कैंसर रिसर्च सेंटर में वायरोलॉजिस्ट और जीव विज्ञानी प्रोफेसर जेस ब्लूम को लगता है कि चीन ने सच पर पर्दा डालने के लिए आंकड़ों को डेटाबेस से हटवाया है। रिसर्चर जेस ब्लूम ने दावा किया कि उन्होंने रहस्यमयी ढंग से गायब हुए वुहान के थुकआती 241 कोरोना केसों के आंकड़ों में से 13 मरीजों का डाटा दोबारा हासिल कर लिया है।

कानपुर के सेंट्रल स्टेशन पर पकड़े गए 16 फर्जी कर्मचारी, नौकरी दिलाने के नाम पर करते थे ठगी

कानपुर के सेंट्रल स्टेशन पर 16 फर्जी रेलवे कर्मचारियों को पकड़ा गया। पकड़े गए लोगों से ऐलवे का फर्जी पहचान पत्र और नियुक्ति पत्र भी बारमद किया गया है। बता दें कि बीते माह एक रात जब टिकेट निरक्षक सुनील पासवान चेकिंग कर रहे थे तभी उसकी नजर दिनेश कुमार गौतम नाम के एक व्यक्ति पर पड़ी। गले में पहचान पत्र के साथ यात्रियों का टिकट चेक करता देख सुनील ने उसे उसकी पहचान पूछी। पहचान पूछने पर दिनेश ने खुद को ऐलवे का स्टाफ बताया। स्टाफ में कभी न दिखने की वजह से संदेह हुआ तो पूछताछ आगे बढ़ी। संदेह होने पर दिनेश को जीआरपी थाने लाया गया। जीआरपी की टीम द्वारा थुक की गयी जांच में 16 फर्जी कर्मचारी सामने आ गये। जांच पड़ताल में पता चला कि चला कि पकड़े गया गिरोह बेटोजगार युवकों को ऐलवे में नौकरी दिलाने के नाम पर ठगी करता था। जीआरपी द्वारा अभी जांच पड़ताल जारी है।

पत्रकार सुलभ श्रीवास्तव की हत्या को लेकर प्रदर्शन, सीबीआई जांच की मांग

अलीगढ़ के पत्रकार सुलभ श्रीवास्तव की हत्या का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। इसी कड़ी में प्रधानमंत्री के संसदीय क्षेत्र वाराणसी में भी व्यापारियों द्वारा सड़कों पर प्रदर्शन किया गया। पत्रकार की मौत को लेकर वाराणसी के व्यापारियोंने सड़कों पर बैनर-तख्ती के साथ उत्तरकर जमकर नारेबाजी की। साथ ही पीड़ित के परिवार के लिए मदद की भी मांग की। भारतीय औद्योगिक व्यापार एसोसिएशन के बैनर तख्ती व्यापारियों के द्वारा वाराणसी के मलदहिया इलाके में विरोध प्रदर्शन किया गया। विरोध प्रदर्शन के दौरान व्यापारियोंने जमकर नारेबाजी की। व्यापारियोंने प्रदर्शन में न्याय के लिए आवाज उठाते हुए पत्रकार की मौत के मामले में सीबीआई जांच के साथ उसके परिवार को नौकरी दिलाने और आर्थिक मदद करने की मांग योगी सरकार से की है।

कड़ाहा पूजा में उड़ी कोरोना नियमों की धज्जियाँ, बिना मास्क के झुण्ड बनाये नज़र आये लोग

जहां एक तरफ प्रसाधन आम जनता से कोरोना के नियमों का पालन करते हुए अपने और अपने समाज को कोरोना मुक्त बनाने की गुहार लगा रही है, तो वहीं वाराणसी के कई गाँवों में कड़ाहा पूजा के दौरान कोरोना के नियमों की धज्जियाँ उड़ती नज़र आ रही हैं। सारनाथ इलाके में कोरोना नियमों की जमकर धज्जियाँ उड़ाई गईं। छाही गांव में कड़ाहा पूजन के नाम पर न सिर्फ भीड़ बटोरी गई बल्कि घंटों पूजा पाठ का दौर चला। पूजा में शामिल अधिकांश लोग बगैर मास्क के पहुंचे हुए थे। यहीं नहीं आयोजन के लिए स्थानीय प्रशासन से परमिशन भी नहीं ली गई थी। पूजा का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। चर्चा इस बात को लेकर है कि छाही गांव के ग्राम प्रधान सर्वेश यादव ने पंचायत चुनाव में जीत के लिए मन्जूत मांगी थी। जीत हासिल होने के बाद उसने कड़ाहा पूजन करवाया। बताया जा रहा है गांव के बाहर डीह बाबा मंदिर पर कड़ाहा पूजन का आयोजन किया गया। पूजा में शामिल होने वाले अधिकांश लोग बगैर मास्क के थे। यहीं नहीं पूजास्थल पर सोशल डिस्टेंसिंग की भी धज्जियाँ उड़ाई गईं। पूजा का दौर घंटों तक चलता रहा। वीडियो के आधार पर पुलिस ने आधा दर्जन लोगों को चिन्हित कर मुकदमा दर्ज किया है।



झद्राक्ष कन्वेंशन में आग पर काबू पाने के लिए अपनाए गये हैं अत्याधुनिक तरीके, इंटरनेशनल फायर स्टैण्डर्ड का रखा गया है ध्यान

पीएम मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी में बने भारत-जापान मैत्री की मिसाल स्वरूप हाइटिक झद्राक्ष कन्वेंशन सेंटर बनकर तैयार हो गया है। इस हाइटिक झद्राक्ष कन्वेंशन सेंटर को अत्याधुनिक तकनीकों से बनाया गया है। इतना ही नहीं, इसमें आने वाले लोगों की सुरक्षा का पूरा ध्यान रखते हुए आग पर काबू पाने के लिए अत्याधुनिक तरीके अपनाए गए हैं। इस हाइटिक कन्वेंशन सेंटर को जापान की कंपनी ओरिएण्टल कंसल्टेंट ज्लोबल डिजाइन के द्वारा डिजाइन किया गया है। इस कन्वेंशन का निमण जापान की ही फुजिता कॉर्पोरेशन द्वारा किया गया है। वाराणसी के मुख्य अग्निशमन अधिकारी अनिमेष सिंह से मिली जानकारी के अनुसार बिल्डिंग में यदि किसी कारण से आग लग जाती है तो उसमें फंसे लोगों को सुरक्षित बाहर निकालने के लिए कई इंटरनेशनल फायर स्टैण्डर्ड का इस्तेमाल किया गया है। बिल्डिंग में आग को रोकने के लिए इसे कई कम्पार्टमेंट में बाटा गया है। बिल्डिंग में 450 स्क्वायर फिट पर एक स्मोक डिटेक्टर है। जिस कम्पार्टमेंट में आग लगता है, वहां खुद ही वाटर कर्टेन बन जाएगा। झद्राक्ष में 12 वाटर कर्टेन लगे हैं, जो आग को वहीं रोक देगा और लोगों को सुरक्षित निकालने का समय मिल जाएगा। वहीं आग का पता चलते ही हॉल के दरवाजे खुद ही खुल जाएंगे। धुआं होते ही स्मोक एनॉस्ट मिस्टर चालू हो जाएगा जिससे धुंआ इमारत से बहार हो जाएगा। लिफ्ट तक आग पहुंचने पर लिफ्ट खुद ही बंद हो जाएगी। मोटोराइज्ड फायर डैम्पर मिस्टर लगे होने से सेंट्रलाइज्ड वातनुकूलित का डैम्पर खुद ही बंद हो जाएगा जिससे धुंआ फैलेगा नहीं। इसके अलावा कंट्रोल घर में बैठा व्यक्ति सीसीटीवी कैमरे में पूरी इमारत की स्थिति को देख कर पीए मिस्टर से आवश्यक निर्देश भी दे सकता है।

जानवरों को माना परिवार, नहीं की शादी

वाराणसी के सिकटौल की रहने वाली स्वाति बलानी को बचपन से ही जानवरों से इतना लगाव है की 40 की उम्र होने के बावजूद उन्होंने अभी तक शादी नहीं की है। स्वाति जानवरों को ही अपना परिवार मानती हैं और उन्हीं से दूर होने के डर से उन्होंने शादी न करने का फैसला लिया है। जिन जानवरों को किसी वजह से लोग अपने घर से निकाल देते हैं स्वाति उन्हें अपना लेती हैं। स्वाति के पास 20 कुत्ते, 17 बिल्लियां, 2 सांड और

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र को मुख्यमंत्री ने लिया गोद, लोगों को मिलेगा बेहतर इलाज



**NEWS
TOP
HEADLINES**

वाराणसी के सेवापुरी अंतर्गत हाथी बाजार के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र को मुख्यमंत्री ने गोद ले लिया है। मुख्यमंत्री के इस फैसले से गाँव में खुशी की लहर देखने को मिल रही। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा सेवापुरी विकास खंड के जयकरण शर्मा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र हाथी बाजार को गोद लेने से जहाँ एक तरफ लोगों को टोजगार मिलेगा तो वहीं दूसरी तरफ इससे ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को बेहतर इलाज भी मिलेगा। इस पर ग्राम प्रधान ने बताया कि हाथी बाजार और आसपास के क्षेत्रों को मिलाकर के 25000 की आबादी है। आगे उन्होंने ने बात जारी रखते हुए कहा कि मुख्यमंत्री के इस फैसले ग्रामीणों को इलाज के लिए बाहर नहीं जाना पड़ेगा। अब गाँव में ही लोगों को फर्स्ट ड्रीटमेंट की सुविधा मिल सकेगी। खास तौर पर अब गर्भवती महिलाओं को गाँव में ही अच्छी सुविधाएं मिल सकेगी।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के मुख्य चिकित्सा अधिकारी हंसराज ने बताया कि अब इस सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में सभी प्रकार की मरीने होंगी और खास तौर पर अब महिलाओं के लिए अब अल्दासाउंड की सुविधा भी उपलब्ध होगी। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में अब ऑक्सीजन प्लांट भी बैठाया जाएगा, साथ ही बच्चों के लिए अलग से वार्ड की व्यवस्था भी की जाएगी।



तकरीबन 5 दर्जन अलग अलग प्रजाति की पश्चियां हैं। इन जानवरों का भरण पोषण स्वाति अपने बच्चों के जैसे करती हैं। जानवरों के प्रति अपना प्यार दिखा के स्वाति ने दुनिया के लिये एक मिसाल पेश किया है।

गंगा के बदले रंग को लेकर बनी जांच कमेटी, सैंपल की जांच जारी

गंगा में शैवाल के कारण वाराणसी में गंगा के बदले रंग का मामला गरमाया हुआ है। पिछले कई दिनों से गंगा का रंग हरे में तब्दील हो गया है। गंगा नदी में शैवाल के कारण नाइट्रोजन और फास्फोरस का लेवल बढ़ गया है। गंगा नदी में नाइट्रोजन और फास्फोरस के बढ़ने से ऑक्सीजन की कमी होने लगी है जो जलीय जंतु के लिए खतरनाक है। साथ ही आम जनमानस के लिए भी गंगा में घनान करना और आचमन करना भी खतरे से खाली नहीं है। वहीं इस मामले को लेकर जिला अधिकारी द्वारा गठित किये गए जांच कमिटी द्वारा किये गए जांच में शैवाल के जमा होने के कारण का खुलासा हुआ है। जांच में आये रिपोर्ट के अनुसार मिजिपुर में गंगा के किनारे यानी आप स्टीम में बने एक पुराने एस्टीपी के कारण गंगा का पानी हरा हुआ है जिसके कारण नदी में शैवाल इकट्ठा हुआ है। मिली जानकारी के अनुसार एस्टीपी को पुराने तकनीक से चलाया जा रहा है जो कि लीकेज करता है और सीवेज गंगा में जाता है यही कारण है कि डाउन स्ट्रीम यानी वाराणसी में गंगा के पानी में शैवाल जमा हो गए हैं। वहीं प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी द्वारा वाराणसी की जनता से गंगा में आचमन और घनान न करने की अपील की गयी है। बीएचयू के इंस्टिट्यूट ऑफ एनवायर्मेंटल स्टडीज के प्रोफेसर कृष्ण राम के मुताबिक गंगा के ऊपर बना ये शैवाल सूर्यों के रेडिएशन के खिलाफ एक कवच बना लेता है जिससे जल में बीओडी की कॉन्सन्ट्रेशन कम होने लगती है। जिससे नाइट्रोजन और फास्फोरस की मात्रा बढ़ जाती है। इसी कड़ी में नमामि गंगे के दिसर्च अफिसर श्री नीरज गहलावत के नेतृत्व में रविवार को गंगा से पानी का सैंपल लेकर जांच की जा रही है। वाराणसी के अस्सी और दथाश्वमेध घाट से गंगाजल का सैंपल लेकर जांच थु़ड़ कर दी गयी है।

काथी में खुले बाबा विश्वनाथ समेत अन्य मंदिर, कोटोना नियमों को किया गया अनिवार्य

बाबा विश्वनाथ की नगरी काथी में श्रद्धालुओं के लिए खुले बाबा विश्वनाथ के दरबार समेत काथी के सभी मंदिर। जिले में 600 से कम मरीजों के होने से जिले के सभी मंदिरों को खोला जा रहा है। कोविड के नियमों के अनुसार बाबा विश्वनाथ के दरबार समेत सभी मंदिरों को आम दर्शनार्थियों के लिया खोला जा रहा है। वहीं अब विश्वनाथ मंदिर में RT-PCR रिपोर्ट की अनिवार्यता को हटा दिया गया है। विश्वनाथ मंदिर के मुख्य

कार्यपालक अधिकारी श्री सुनील कुमार वर्मा के अनुसार मंदिर में कोटोना के नियमों का पालन करते हुए एक बार में केवल 5 ही श्रद्धालुओं को ही दर्शन करने की आज्ञा होगी। काथी विश्वनाथ में सोशल डिस्टन्सिंग के लिए गोला बनाया गया है, मंदिर परिसर में



मास्क अनिवार्य है, मंदिर खोलने के दौरान समय-समय पर मंदिर को दैनिकाइन करवाया जाएगा। मंदिर के पुरोहितों द्वारा श्रद्धालुओं को माला और चंदन लगाना मना है। बाबा को दूर से

जल से चढ़ाया जा सकता है। काथी के प्रसिद्ध श्री संकट मोचन मंदिर में भी मास्क को अनिवार्य करते हुए गेट पर स्कैनिंग कर के श्रद्धालुओं को अंदर भेजा जा रहा है। एक तरफ जहां एक तरफ श्री काथी विश्वनाथ में भक्त बाबा के दर्शन के लिए कोविड की गाइडलाइन का पालन करते दिखे वहीं दूसरी तरफ संकट मोचन मंदिर में प्रशासन के अथक प्रयास के बाद भी श्रद्धालु झुण्ड बनाते नजर आए।

ब्लड सैम्पल्स पर कोटोना को लेकर शोध, सामने आई चौकाने वाली रिपोर्ट

बाबा विश्वनाथ की नगरी काथी में श्रद्धालुओं के लिए खुले बाबा विश्वनाथ के दरबार समेत काथी के सभी मंदिर। जिले में 600 से कम मरीजों के होने से जिले के सभी मंदिरों को खोला जा रहा है। कोविड के नियमों के अनुसार बाबा विश्वनाथ के दरबार समेत सभी मंदिरों को आम दर्शनार्थियों के लिया खोला जा रहा है। वहीं अब विश्वनाथ मंदिर में RT-PCR रिपोर्ट की अनिवार्यता को हटा दिया गया है। विश्वनाथ मंदिर के मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री

सुनील कुमार वर्मा के अनुसार मंदिर में कोटोना के नियमों का पालन करते हुए एक बार में केवल 5 ही श्रद्धालुओं को ही दर्शन करने की आज्ञा होगी। काथी विश्वनाथ में सोशल डिस्टन्सिंग के लिए गोला बनाया गया है, मंदिर परिसर में मास्क अनिवार्य है, मंदिर खोलने के दौरान समय-समय पर मंदिर को सैनिटाइज करवाया जाएगा। मंदिर के पुरोहितों द्वारा श्रद्धालुओं को माला और चंदन लगाना मना है। बाबा को दूर से जल से चढ़ाया जा सकता है।



काथी के प्रसिद्ध श्री संकट मोचन मंदिर में भी मास्क को अनिवार्य करते हुए गेट पर स्कैनिंग कर के श्रद्धालुओं को अंदर भेजा जा रहा है। एक तरफ जहां एक तरफ श्री काथी विश्वनाथ में भक्त बाबा के दर्शन के लिए कोविड की गाइडलाइन का पालन करते दिखे वहीं दूसरी तरफ संकट मोचन मंदिर में प्रशासन के अथक प्रयास के बाद भी श्रद्धालु झुण्ड बनाते नजर आए।

अथोका इंस्टीच्यूट के छात्रों ने बनाया एंटी कोरोना डिवाइस, भीड़ होने पर करेगा सूचित

वाराणसी के अथोका इंस्टीच्यूट के इंजीनियरिंग के अंतिम वर्ष के 3 छात्र शुभम मिश्रा, अभीष्ट सिंह और किशन पाल ने मिलकर कोरोना को फैलने से रोकने के लिए एक डिवाइस तैयार किया है। छात्रों ने इस डिवाइस को एंटी कोरोना ओवरक्राउड अलर्ट नाम दिया है। बता दिन जिसमें यह डिवाइस किसी भी जगह पर 4 से ज्यादा फीड नजदीकी पुलिस थाने के अधिकारियों के देकर अलर्ट कर देगा। इस डिवाइस को थॉपिंग समेत उन सभी क्षेत्रों में इनस्टॉल किया जा सकता है। 2 से 3 फ़िट के इस डिवाइस में इंस्टीच्यूट के प्रोफेसर संदीप मिश्रा के नेतृत्व में के नियमों का पालन न करने वालों पर करेगा। इसे बनाने में लगभग 10-12 हजार रुपये का खर्च आया है और इसे बनाने में 15 दिनों का समय लगा है। छात्रों के इस प्रयास को देखते हुए अथोका इंस्टीच्यूट की डायरेक्टर सारिका श्रीवास्तव ने छात्रों की तारीफ की है और छात्रों के आविष्कार की जानकारी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार को पत्र भी लिखा है, जिससे छात्रों के आविष्कार को मार्गदर्शित किया जाए।



उत्तर प्रदेश की बांदा जेल से भागा अपराधी, मुख्तार की सुरक्षा पर उठे सवाल

उत्तर प्रदेश के बांदा जेल से भागे एक अपराधी के बाद बांदा जेल की हाई स्क्यूरिटी व्यवस्था एक बार फिर सुर्खियों में है। बता दें कि लूट और डकैती के आरोप में कैद एक अपराधी पुलिस को चकमा दे कर फरार होने में कामयाब हो गया। जेल में अलार्म बजने के बाद तैनात पुलिसकर्मी सकते में आये, जिसके बाद पुलिस प्रसाशन में हड़कंप मच गया। सूत्रों के मुताबिक कुछ्यात अपराधी मुख्तार अंसारी को भी उत्तर प्रदेश के इसी बांदा जेल में रखा गया है। मुख्तार को इस जेल में रखने के बाद इसमें कड़ी सुरक्षा का दावा किया गया।

था मगर रविवार को जेल से भागे कैदी के बाद बाँदा जेल की सुरक्षा की पोल खुल गयी है। सूचना मिलने पर मौके पर सीओ और सिटी मजिस्ट्रेट के

पहुंचने के बाद जेल में गहन तलाश के बाद भी कैदी जेल में नहीं मिला। अब घटना के बाद ये प्रश्न खड़ा हो गया है कि क्या बांदा जेल में मुख्तार अंसारी के लिए जेल में बनाइ गयी सुरक्षा व्यवस्था में आखिर ऐसी लापरवाही कैसे हुई?



दोस्त ही निकला दोस्त का कातिल, गाड़ी को लूटने के लिए गला दबाकर की हत्या

वाराणसी के शिवपुर थाना क्षेत्र में टेलवे क्रासिंग के पास से मृत अवस्था में मिले मनीष कुमार थर्मा की हत्या के मामले में पुलिस ने 24 घंटे के भीतर ही आरोपियों को पकड़ लिया। पुलिस के मुताबिक मनीष की हत्या उसके ही दोस्त विजय और उसके एक अन्य साथी

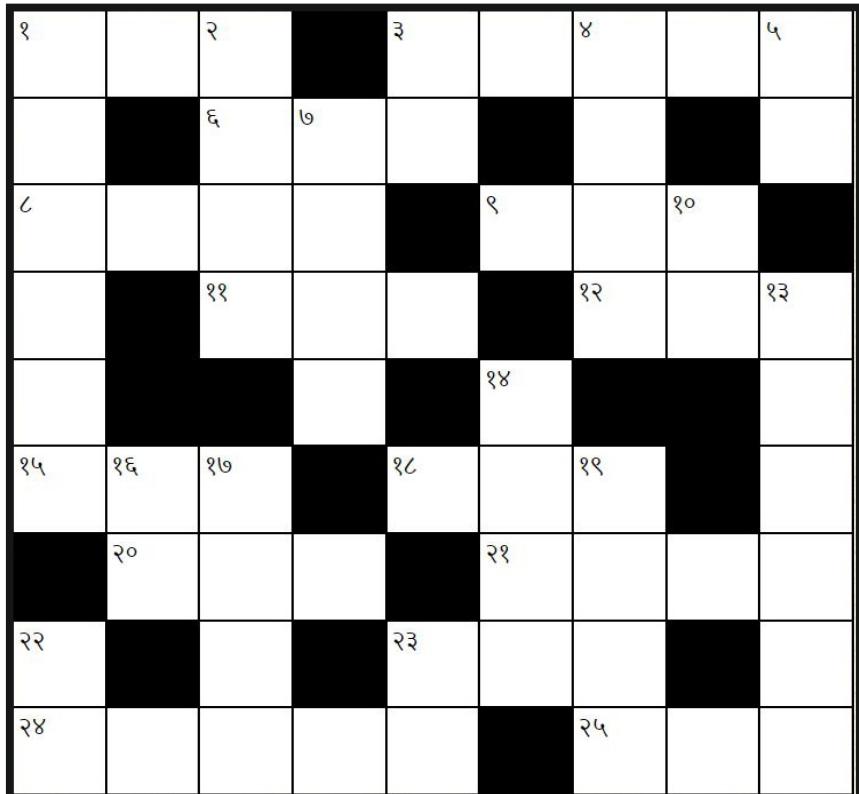
थोहित ने गला दबाकर की थी। पुलिस ने हत्या की वजह का खुलासा करते हुए बताया कि मृतक मनीष की इंडिगो गाड़ी की लूट के मकसद से हत्या को अंजाम दिया गया। इस संबंध में डीसीपी काथी जोन अमित कुमार ने बताया कि पकड़े गए आरोपियों ने बताया कि उन लोगों ने मनीष को शारीर पीने के बहाने फोन कर बुलाया और जमकर शारीर पिलाई। जब मनीष नशे में धूत हो गया तो दोनों ने मिलकर गमछे से उसकी गला दबाकर हत्या कर दी। उन्होंने बताया कि हत्या में बरामद गमछा और मृतक मनीष का मोबाइल फोन बरामद कर लिया गया है। हत्या का खुलासा करने वाली पुलिस टीम को डीसीपी काथी जोन अमित कुमार ने 10 हजार की पुरस्कार दायी की घोषणा की है।



वर्ग-पहेली!

ऊपर से नीचे-

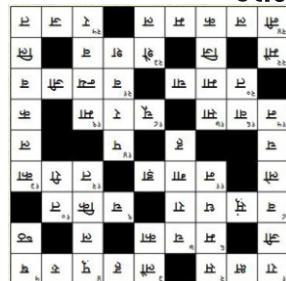
- 1.कमल नयन (6)
- 2.बेटे या बेटी की सास (4)
- 3.बड़ी लौकी, कटू (2)
- 4.रोमांचित (4)
- 5.छह (2)
- 7.पशुओं के चरने का मैदान (4)
- 10.शौरबा, तरावट (2)
- 13.काल का ग्रास बना हुआ (6)
- 14.आश्रित, दूसरे के काबू में (4)
- 16.हवा (2)
- 17.समाज से सम्बन्धित (4)
- 19.माननीय (4)
- 22.मौन रखने वाला (साधु) (2)
- 23.शिला, पत्थर (2)



बाएँ से दाएँ-

- | | | |
|---------------------------------|----------------------------------|-----------------|
| 1.दैत्य, निशाचर (3) | 12.पद्धति, ढँग, यकियुक मार्ग (3) | 24.नीलोत्पल (5) |
| 3.दृढ़ व्यक्तित्व वाला पुळष (5) | 15.बेटी का बेटा (3) | 25.चाँदी (3) |
| 6.झले की पेंग (3) | 18.एक राजस्थानी मिष्ठान (3) | |
| 8.पृथकी (4) | 20.थप्पड़ (3) | |
| 9.अचंभित (3) | 21.जंगली प्राणी (4) | |
| 11.नक्कागा (3) | 23.शिथु सम्बन्धी (3) | |

उत्तर-



मिलिंद पटेल
(संरक्षक)



राजन श्रीवास्तव
(संपादक)



रमेश उपाध्याय
(वारिष्ठ पत्रकार)



विकास श्रीवास्तव
(पत्रकार)



सुधीर कुमार गुप्ता
(वीडियो एडिटर)



निमांशी पांडेय
(वीडियो एडिटर)



दीपेन्द्र प्रताप
(छायाकार)



रवि पटेल
(कंटेंट एडिटर)



प्रियांशी श्रीवास्तव
(कंटेंट एडिटर)



अमित यादव
(मार्केटिंग)



कुलदीप कपूर
(संवाददाता)



जय पाल
(संवाददाता)

HOTEL UTSAV RESIDENCY

FACILITIES:

- Take the Charge & Control of or Centralized Air Conditioned Rooms.
- For good picture quality & clear visibility, enjoy our 32" LCD Television.
- 24 Hours Room Service.
- Doctor on Call.
- Laundry Services.
- Medical Centre.
- Free Wifi.

LOCATION:

BABA COMPLEX, BHU ROAD, LANKA,
VARANASI

Email: hotelutsavresidency@gmail.com

Tel. 0542-2367080



BABA RESTAURANT

The Restaurant serves everything from traditional Indian, Chinese and Continental Cuisine dishes.



go mmt
GROUP
make my trip | goibibo

न्यूज़ बकेट

अगर आप अपने आस पास घटने वाली खबरों को, किसी तस्वीर या वीडियो या कोई लेख हमारे वेबसाइट और पत्रिका में प्रकाशित करवाना चाहते हैं, तो आप हमसे ईमेल पर कांटेक्ट कर सकते हैं।

हमारा ईमेल है - m@fivealphabets.com

आप हमसे व्हाट्सएप नंबर +(91)9015240924 पर भी संपर्क कर सकते हैं।

कोरोना महामारी के इस दौर में,
मैं मिथिलेश पटेल
(संरक्षक व प्रकाशक, न्यूज़ बकेट)
अपने टीम के साथ
सदैव आपके साथ हूँ।

किसी भी तरह की
सहायता के लिए हमसे
संपर्क करें।

घर रहें,
सुरक्षित रहें!



मिथिलेश पटेल

WWW.NEWSBUCKET.IN

B.TECH, MBA (CARDIFF UNIVERSITY, UK), JOURNALISM (BHU)